हाना का
सूटकेस
एक सच्ची कहानी
कैरन लेवाइन
Jude
एकलव्य

हाना का सूटकेस

एक सच्ची कहानी

कैरन लेवाइन

अँग्रेज़ी से अनुवाद
पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एकलव्य

हाना का सूटकेस
HANA KA SUITCASE
कैरन लेवाइन
अँग्रेज़ी से अनुवादः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा
डिज़ाइन सहयोग: राकेश खत्री
सम्पादकीय सहयोगः टुलटुल बिस्वास, सीमा और दीपाली शुक्ला
विशेष सहयोग: अम्बर

पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

संस्करणः जनवरी 2019 / 1000 प्रतियाँ
पहला पुनर्मुद्रणः मार्च 2020 / 2000 प्रतियाँ
कागज़ 80 gsm मेपलिथो एवं 300 gsm पेपर बोर्ड कवर
ISBN : 978-93-85236-75-4
मूल्यः ₹ 130.00

प्रकाशकः **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर
फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, जाटखेड़ी,
भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोनः +91 755 - 297 7770, 71, 72, 73
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल, फोनः +91 755 268 7589

मेरे माता-पिता,
हेलेन और गिल लेवाइन के लिए।

– कैरन लेवाइन

परिचय

लगभग 70 साल के दरमियान दुनिया के तीन महाद्वीपों में घटने वाली एक सच्ची कहानी है *हाना का सूटकेस*। 1930 व 1940 के दशकों में चेकोस्लोवाकिया में रहने वाली एक लड़की और उसका परिवार, आधुनिक समय में तोक्यो (जापान) में रहने वाली एक युवती व बच्चों के एक समूह और टोरॉन्टो (कनाडा) के एक शख़्स के अनुभव इस कहानी में आपस में आ मिलते हैं।

1939 से 1945 तक दुनिया में एक बड़ा भारी युद्ध हो रहा था। नाज़ी तानाशाह एडॉल्फ हिटलर चाहता था कि दुनिया भर में जर्मनी का राज हो जाए। उसके इस सपने के केन्द्र में था दुनिया से यहूदी कौम का बर्बरतापूर्ण सफाया। अपने इन 'दुश्मनों' का सफाया करने के लिए उसने दर्जनों बन्दी शिविर बनाए, जिन्हें यातना शिविर (concentration camp) कहा जाता था। ये शिविर यूरोप भर में फैले थे। यूरोप के सभी देशों में बसे यहूदी स्त्री, पुरुष और बच्चों को उनके परिवारों से ज़बरदस्ती अलग करके इन शिविरों में भेज दिया गया था, जहाँ उन्होंने भयानक तकलीफें झेलीं। इनमें से कई लोग तो भूख और बीमारियों से मर गए। लेकिन ज़्यादातर लोगों की हत्या कर दी गई। हिटलर के अनुयायी, मौत के इन शिविरों में और दूसरी जगहों पर भी, उसकी भयंकर योजना को अंजाम देते रहे। साठ लाख यहूदियों को मौत के घाट उतार दिया गया। इन मरने वालों में 15 लाख यहूदी बच्चे भी शामिल थे।

1945 में जब दूसरा विश्वयुद्ध खत्म हुआ, तब दुनिया भर ने जाना कि इन यातना शिविरों में कैसी-कैसी भयावह घटनाएँ घटी थीं। तब से ही लोग उसके बारे में जानने-समझने की कोशिश करते रहे हैं जिसे आज 'हॉलोकॉस्ट' (नरसंहार) कहा जाता है। यह दरअसल मानव जाति के इतिहास में कत्लेआम या नरसंहार का सबसे भयानक उदाहरण है। यह आखिर हुआ कैसे? हम यह कैसे सुनिश्चित करें कि भविष्य में ऐसा फिर कभी न हो?

जापान उन देशों में से एक है जिसने दूसरे विश्वयुद्ध में नाज़ी जर्मनी का साथ दिया था। यहाँ हॉलोकॉस्ट के इतिहास पर अब जाकर ध्यान दिया जाने लगा

है। एक अज्ञात जापानी दानदाता ने तय किया कि जापान के बच्चों के लिए विश्व इतिहास के इस पहलू को जानना-समझना बेहद ज़रूरी है। वे विश्व में सहनशीलता और आपसी समझ बढ़ाने में मदद करना चाहते थे। उन्होंने तोक्यो हॉलोकॉस्ट एज्यूकेशन रिसोर्स सेंटर (तोक्यो नरसंहार शिक्षा स्रोत केन्द्र) को वित्तीय सहायता दी ताकि वह इस उद्देश्य के लिए काम करे।

1999 में हॉलोकॉस्ट पर एक बाल सम्मेलन आयोजित हुआ जिसमें तोक्यो क्षेत्र के विभिन्न स्कूलों के 200 विद्यार्थी याफा इलिआच से मिले जो इस नरसंहार से बच सकी थीं। उन्होंने बच्चों को बताया कि उनके गाँव के लगभग हरेक यहूदी – बच्चे, जवान या बुज़ुर्ग – की नाज़ियों ने हत्या कर दी थी। अपने भाषण के अन्त में उन्होंने श्रोताओं को याद दिलाया कि 'भविष्य में शान्ति की रचना' कर पाने की ताकत बच्चों में है। श्रोताओं में मौजूद दर्जन भर जापानी नौजवानों ने इस चुनौती को स्वीकारा। उन्होंने 'स्मॉल विंग्स' (नन्हे पंख) नामक समूह की स्थापना की। अब इस समूह के सदस्य, जिनकी उम्र आठ से अठारह साल के बीच है, हर माह मिलते हैं। वे एक न्यूज़लैटर छापते हैं, तोक्यो हॉलोकॉस्ट एज्यूकेशन रिसोर्स सेंटर चलाने में मदद करते हैं और दूसरे जापानी बच्चों की नरसंहार के इतिहास में रुचि बढ़ाने के लिए काम करते हैं। यह सब वे फूमिको इशिओका के मार्गदर्शन में करते हैं, जो तोक्यो हॉलोकॉस्ट सेंटर की निदेशक हैं।

एक सूटकेस – हाना का सूटकेस – उनके मुहिम की सफलता की कुंजी है। इस सूटकेस में गहरी उदासी और अथाह आनन्द की कहानी है, अतीत की क्रूरता की याद के साथ ही भविष्य के लिए उम्मीद भी है।

तोक्यो, जापान

सन् 2000 की सर्दियाँ

सच, यह एक साधारण-सा दिखने वाला सूटकेस है। इसके किनारे कुछ घिसे हुए हैं, पर हालत ठीक-ठाक है।

इसका रंग भूरा है। बड़ा है। इसमें काफी सामान रखा जा सकता है – शायद एक लम्बी यात्रा के लिए कपड़े। किताबें, अपनी चहेती चीज़ें, खेल-खिलौने। पर अब इसमें कुछ भी नहीं है।

तोक्यो, जापान के एक छोटे से संग्रहालय में बच्चे हर रोज़ इस सूटकेस को देखने आते हैं। यह काँच के एक कैबिनेट में रखा हुआ है। काँच के पार आप देख सकते हैं कि सूटकेस पर कुछ लिखा हुआ है। सफेद रंग से, सूटकेस के ऊपरी हिस्से पर एक लड़की का नाम लिखा है: हाना ब्रेडी। उसके जन्म की तारीख भी दर्ज है: मई 16, 1931। एक और शब्द है: वाइज़ैनकिंड (Waisenkind)। अनाथ बच्चों को जर्मन भाषा में यही कहा जाता है।

जापानी बच्चे यह जानते हैं कि यह सूटकेस आउश्वित्ज़ (Auschwitz) नामक एक यातना शिविर से आया है, जहाँ लाखों लोगों ने 1939 से 1945 के बीच दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान यातनाएँ झेलीं और मारे गए। पर यह हाना ब्रेडी थी कौन? वह कहाँ, किस देश की थी? वह आखिर जा कहाँ रही थी? उसने इस सूटकेस में क्या-क्या रखा था? वह अनाथ कैसे हुई? वह कैसी लड़की थी और उसके साथ क्या हुआ था?

बच्चों के मन में तमाम सवाल कुलबुलाते हैं। संग्रहालय की निदेशक के मन में भी, जो लम्बे बालों वाली एक युवती है। नाम है फूमिको इशिओका।

फूमिको और बच्चे सूटकेस को सावधानी से काँच के बक्से से निकालते और खोलते हैं। वे सूटकेस के अन्दर, बगल वाली जेबें तलाशते हैं। शायद हाना ने कोई सुराग छोड़ा हो।

कुछ भी हाथ नहीं लगता। वे गोल बिन्दियों वाली लाइनिंग के नीचे देखते हैं। वहाँ भी कोई सुराग नहीं है।

फूमिको बच्चों से वादा करती है कि सूटकेस की मालकिन के बारे में जो कुछ खोज सकेगी ज़रूर खोजेगी, ताकि उसका रहस्य सुलझ सके। और अगले साल भर तक वह एक जासूस बन जाती है, दुनिया भर में हाना ब्रैडी की कहानी के सुराग तलाशने में जुट जाती है।

हाना का सूटकेस। वैसे तो वह अपने नाम में एक n लगाती थी, पर जर्मन भाषा में दो n लगाए जाते हैं, जैसा सूटकेस पर दर्ज है।

नोवे मेश्तो शहर और उसके आसपास का इलाका

नोवे मेश्तो, चेकोस्लोवाकिया

1930 का दशक

उस ज़माने के चेकोस्लोवाकिया के बीच में स्थित ऊँची-नीची पहाड़ियों में, मोराविया नामक प्रान्त में बसा था नोवे मेश्तो नामक कस्बा। खास बड़ा नहीं था पर मशहूर था। और खासकर सर्दियों के मौसम में बेहद व्यस्त रहता था। देश भर के लोग नोवे मेश्तो में स्की (Ski) करने आते। वहाँ विभिन्न तरह की स्की प्रतियोगिताएँ और दौड़ें होती थीं, जमे तालाबों पर स्केटिंग होती थी। गर्मियों में भी तैराकी, नौकायन, मछली पकड़ने और कैम्पिंग के तमाम अवसर थे।

नोवे मेश्तो की आबादी चार हज़ार थी। एक ज़माने में यह कस्बा काँच के सामान के लिए मशहूर था। लेकिन 1930 के दशक में लोग जंगलों और स्की बनाने के छोटे कारखानों में काम करते थे। कस्बे की मुख्य सड़क पर एक बड़ा दुमंज़िला सफेद मकान था। उसमें दुमंज़िला अटारी थी। उसके तहखाने में एक खुफिया गलियारा था जो शहर के मुख्य चौक में बने चर्च तक जाता था। पुराने ज़माने में, जब कस्बा घेर लिया जाता था तो सैनिक इसमें नोवे मेश्तो के बाशिन्दों के लिए खाने-पीने का सामान रखा करते थे।

इसी मकान की पहली मंज़िल पर कस्बे का जनरल स्टोर था। वहाँ से लगभग सब कुछ खरीदा जा सकता था – बटन, जैम, तेल से जलने वाली लालटेन, पाँचे (Rakes), स्लेज की घण्टियाँ, चाकुओं की धार बनाने वाले पत्थर, तश्तरियाँ, कागज़, कलम और मीठी गोलियाँ। तीसरी मंज़िल पर ब्रैडी परिवार रहता था: पापा कारेल, माँ मारकेटा, हाना और उसका बड़ा भाई जॉर्ज।

पापा हफ्ते में छह दिन इसी दुकान में काम करते थे। वे कई खेलों में माहिर थे और फुटबॉल, स्कीइंग व जिम्नास्टिक से अपने प्यार के कारण नोवे मेश्तो के लगभग सभी लोगों में जाने जाते थे। वे अभिनय के भी शौकीन थे और उनकी आवाज़ इतनी बुलन्द थी कि खेल मैदान के एक छोर से दूसरे छोर तक सुनी जा सकती थी। यही कारण था कि जब लम्बी दूरी की स्की दौड़ें होतीं तो उन्हें कहा जाता कि वे भोंपू

से सारी घोषणाएँ करें ताकि सभी लोग जो हो रहा है उसे सुन सकें। वे आग बुझाने वाली टोली के स्वैच्छिक सदस्य भी थे, जो आग लगने पर दमकल पर चढ़कर लोगों की मदद करने जाते थे।

ब्रेडी परिवार का घर सभी तरह के कलाकारों के लिए खुला था – संगीतकार, चित्रकार, कवि, मूर्तिकार व अभिनेता। अगर कलाकार कभी भूखे होते तो उन्हें वहाँ हमेशा गरमागरम खाना मिलता था जो बोश्का बनाती। बोश्का, घर की देखभाल करने वाली और रसोइया थी। कलाकारों को वहाँ उत्सुक श्रोता और दर्शक भी मिलते थे, जिसमें परिवार के दो शरारती बच्चे – हाना और जॉर्ज भी शामिल थे। कभी-कभार जॉर्ज से भी कहा जाता कि वह अपनी वायलिन बजाए। हाना भी हर इच्छुक व्यक्ति के सामने अपने पियानो बजाने के कौशल के प्रदर्शन के लिए तैयार रहती थी। उनके बैठकखाने में बीचों-बीच एक रिकॉर्ड प्लेयर भी था जिसकी चाबी हाथ से भरनी पड़ती थी। हाना उस पर बार-बार अपना पसन्दीदा गीत – "मेरे पास हैं नौ कनारी चिड़ियाँ (Canaries)" – बजाया करती थी।

माँ एक उदार और स्नेही मेज़बान थीं। वे विनोदप्रिय थीं और उनकी हँसी बुलन्द थी। वे भी हफ्ते में छह दिन दुकान में काम करती थीं, और लोग अक्सर सिर्फ उनकी हँसी-मज़ाक सुनने के लिए दुकान में आया करते थे। वे नोवे मेश्तो के छोर पर रहने वाले गरीब लोगों का खास खयाल रखती थीं। हफ्ते में एक दिन वे खाने-पीने के सामान और कपड़ों के बण्डल बनातीं जिन्हें हाना ज़रूरतमन्द पड़ोसियों को पहुँचाया करती थी। यह काम हाना को बेहद पसन्द था और वह माँ से अक्सर बण्डल बनाने के लिए कहती थी।

हाना भी दुकान में मदद करती थी। जब हाना और जॉर्ज बहुत छोटे थे तभी से उनको यह ज़िम्मेदारी दे दी गई थी कि वे आलों में सामान जमाएँ और उन्हें साफ व तरतीब से रखें। उन्होंने यीस्ट के टुकड़े करना, चीनी की डली से छोटे टुकड़े काटना, मसालों को तौलना और कागज़ मोड़कर पुंगी बनाकर उनमें मीठी गोलियाँ भरकर उन्हें बेचना सीख लिया था। कभी-कभार माँ गौर करतीं कि मीठी गोलियों वाली कुछ पुंगियाँ गायब हैं। पर हाना ने कभी जॉर्ज की चुगली नहीं की। और न ही जॉर्ज ने हाना की।

दुकान के आसपास हमेशा बिल्लियाँ हुआ करती थीं जो पूरे समय चूहे पकड़ने के काम पर तैनात रहती थीं। पर एक बार एक खास तोहफे के रूप में माँ और पापा ने बच्चों के लिए सफेद रोएँदार अंगोरा बिलौटियाँ मँगवाई थीं। ये नर्म नन्ही बिलौटियाँ छेदवाले डिब्बे में डाक से आई थीं। पहले-पहल सिलवा परिवार का कुत्ता, जो भारी

स्कूल के नाटक की वेशभूषा में हाना

भरकम धूसर रंग का जीव था, उन्हें शक से सूँघा करता था। पर जल्दी ही ये नन्ही बिलौटियाँ भी, जिनका नाम हाना ने मिकी और मोडरेक रखा था, परिवार का सदस्य बन गई थीं।

हाना और जॉर्ज सरकारी स्कूल में पढ़ते थे। वे सामान्य बच्चे थे जो आम बच्चों जैसी शैतानियाँ करते थे, जिनको कभी सफलता तो कभी मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। केवल एक बात उनमें ज़रूर अलग थी।

ब्रैडी परिवार यहूदी था। यह परिवार बहुत धार्मिक नहीं था। पर माँ और पापा यह ज़रूर चाहते थे कि बच्चे अपनी विरासत से परिचित हों। हफ्ते में एक बार जब उनके दोस्त चर्च जाते, हाना और जॉर्ज अपने खास शिक्षक के साथ बैठते जो उन्हें यहूदी उत्सवों और यहूदी इतिहास के बारे में बताते थे।

नोवे मेश्तो में कुछ और यहूदी परिवार भी थे। पर हाना और जॉर्ज कस्बे के अकेले यहूदी बच्चे थे। शुरू-शुरू में इस बात पर न तो किसी का ध्यान गया, न ही किसी ने परवाह की कि वे दूसरों से अलग हैं। पर जल्दी ही यह बात कि वे यहूदी हैं, उनके बारे में सबसे महत्वपूर्ण बात बनने जा रही थी।

नोवे मेश्तो। ब्रैडी परिवार बाईं तरफ से चौथी इमारत की दूसरी मंज़िल पर रहते थे। नीचे की मंज़िल में उनकी दुकान थी।

तोक्यो

सन् 2000 की सर्दियाँ

इधर, आधी दुनिया के पार स्थित जापान के अपने दफ्तर में, आधी सदी से भी ज़्यादा साल बीत जाने के बाद, फूमिको इशिओका याद कर रही थी कि सूटकेस उन तक पहुँचा कैसे था।

1998 में उसने तोक्यो हॉलोकॉस्ट सेंटर नामक एक छोटे-से संग्रहालय में निदेशक के रूप में काम करना शुरू किया था। यह केन्द्र जापानी बच्चों को नरसंहार के बारे में शिक्षित करने को समर्पित था। इज़राइल में आयोजित एक सम्मेलन में फूमिको कुछ ऐसे लोगों से मिली थी जिन्होंने यातना शिविरों की भयावहताएँ झेली थीं। इतना कुछ झेलने के बावजूद उनका आशावादी दृष्टिकोण, जीवन के प्रति उनका उल्लास देखकर फूमिको दंग रह गई थी। जब भी फूमिको अपने जीवन की घटनाओं पर उदास होती, वह इन लोगों के बारे में सोचती। इन लोगों की इच्छाशक्ति कितनी मज़बूत थी और वे कितने समझदार थे। वे उसे कितना कुछ सिखा सकते थे।

फूमिको चाहती थी कि जापान के बच्चे और किशोर इस यूरोपीय नरसंहार से भी कुछ सीखें। इसे सम्भव बनाना ही तो उसका काम भी था। और यह काम आसान नहीं था। पचास साल पहले, दूर-दराज़ के महाद्वीप के लाखों यहूदी बच्चों के साथ जो कुछ हुआ था उसकी भयावह कहानी को वह आज के जापानी बच्चों को समझाने में कैसे मदद कर सकती है, फूमिको यही सोचा करती थी।

उसने तय किया कि सबसे बेहतर होगा कि सिखाने का काम कुछ ठोस चीज़ों से किया जाए जिन्हें बच्चे देख और छू सकें। उसने दुनिया भर के यहूदी और नरसंहार संग्रहालयों को खत लिखे – पोलैंड, जर्मनी, अमरीका व इज़राइल के संग्रहालयों को। और अनुरोध किया कि वे यहूदी बच्चों की चीज़ें उनके संग्रहालय को कुछ समय के लिए उधार दे दें। ये खत फूमिको ने इंटरनेट पर भेजे। उसने उन तमाम लोगों को व्यक्तिगत पत्र भी लिखे जो इस काम में मददगार हो सकते थे। फूमिको को जूतों की जोड़ी और एक सूटकेस जैसी चीज़ों की तलाश थी।

सेंटर पर बच्चों को यहूदी नरसंहार के बारे में बताती फूमिको

तोक्यो, जापान स्थित
नरसंहार शिक्षा स्रोत केन्द्र

सब ने फूमिको का अनुरोध ठुकरा दिया। कहा कि जिन चीज़ों की उन्होंने इतनी सावधानी से सालों-साल देखभाल की थी, उन्हें इतनी दूर, एक छोटे-से संग्रहालय के पास भेजना नामुमकिन है। आगे क्या करना चाहिए यह फूमिको नहीं जानती थी। पर इतनी आसानी से हार मानने वाली इन्सान भी वह नहीं थी। बल्कि उसका स्वभाव इससे ठीक उलट ही था। जितनी ज़्यादा बार उसका अनुरोध ठुकराया गया, उसका संकल्प उतना ही मज़बूत होता चला गया।
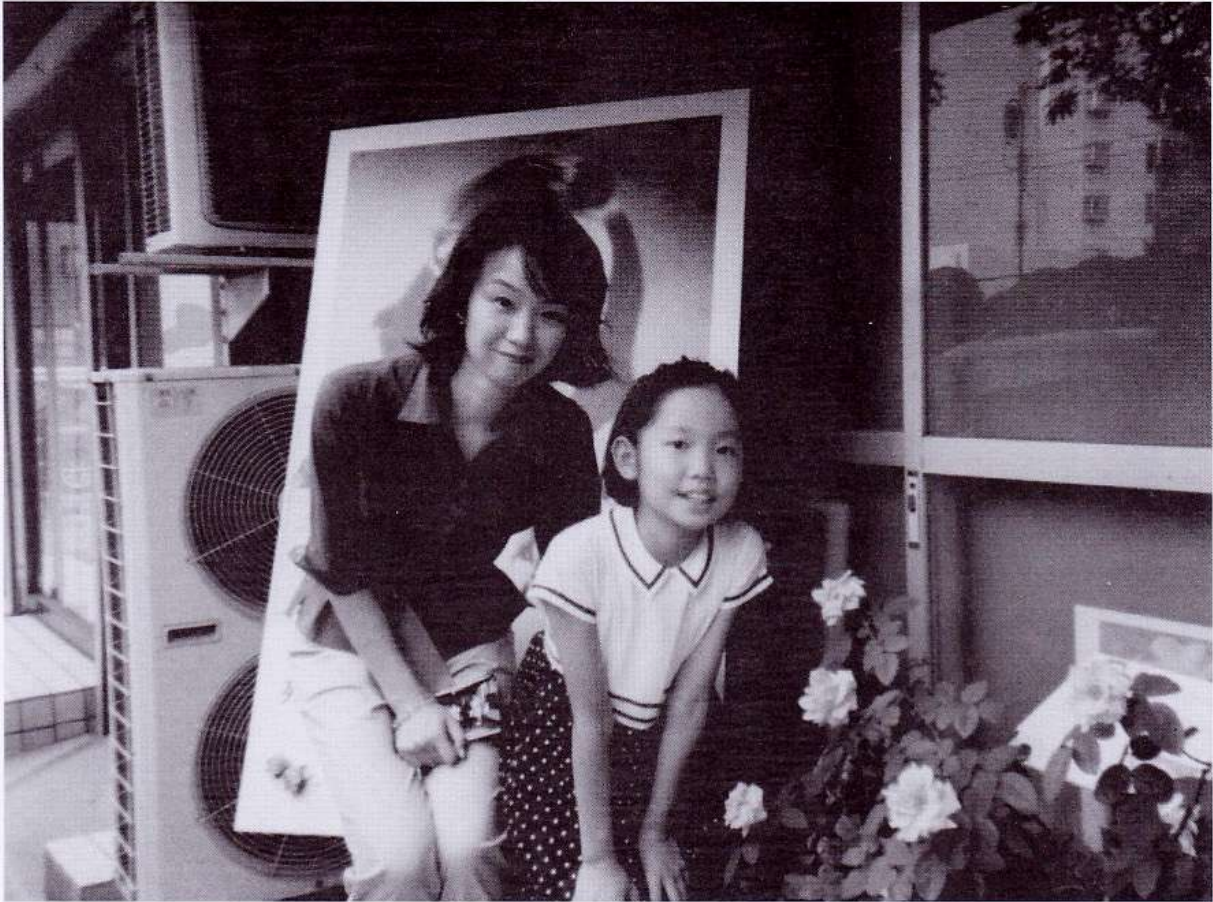
फूमिको इशिओका और केन्द्र पर आई एक बच्ची

उसी साल पतझड़ के मौसम में फूमिको पोलैंड गई, जहाँ नाज़ियों ने कई यातना शिविर चलाए थे। वहाँ वह सबसे कुख्यात शिविर स्थल पर बने आउश्वित्ज़ संग्रहालय गई। फूमिको ने संग्रहालय के सहायक निदेशक से एक छोटी मुलाकात का आग्रह किया। उसे अपनी बात रखने के लिए पाँच मिनट का समय दिया गया। जब वह सहायक निदेशक के कमरे से निकली तो उसे यह आश्वासन मिल चुका था कि उसके अनुरोध पर विचार किया जाएगा।

कुछ महीनों बाद आउश्वित्ज़ संग्रहालय से एक पार्सल आया जिसमें एक बच्चे का मोज़ा और जूता, एक स्वेटर, ज़ायक्लॉन बी नामक ज़हरीली गैस का एक डिब्बा और एक सूटकेस था – हाना का सूटकेस।

जब हाना छोटी थी तो उसे बाहर खुले में खेलना बहुत पसन्द था

नोवे मेश्तो

1938

हाना के बाल सुनहरे थे, आँखें नीली और प्यारा-सा गोल चेहरा था। वह एक मज़बूत बच्ची थी। कभी-कभार वह जॉर्ज को लड़ने के लिए उकसाती थी ताकि अपनी ताकत दिखा सके। भले ही उसका भाई तीन साल बड़ा था, फिर भी कभी-कभी हाना ही जीतती। पर ज़्यादातर समय, हाना और जॉर्ज आपस में अच्छे से खेला करते थे।

गर्मियों में, घर के पिछवाड़े स्थित सँकरी नदी में वे नौसेना के नाविक होने का खेल खेलते। लकड़ी के एक पुराने नहाने वाले टब में बैठकर दोनों बच्चे तब तक पानी में तैरते, जब तक उनमें से कोई एक टब के बीचों-बीच लगे प्लग को नहीं खोल देता। फिर दोनों खिलखिलाते हुए हाथ-पैर से पानी उछालते, डूब जाते। घर के पिछवाड़े के बागान में तीन तरह के झूले थे – एक छोटे बच्चे वाला, दूसरा जिसमें दो लोग बैठ सकते थे और तीसरा जो नदी के पास खड़े विशाल पेड़ से लटका करता था। कभी-कभी महल्ले के सारे बच्चे वहाँ इकट्ठा हो झूलने की प्रतियोगिता करते। कौन सबसे ऊँची पेंग भर सकता है? कौन सबसे ज़्यादा दूर कूद सकता है? अक्सर हाना ही जीतती।

दुकान के ऊपर बने अपने घर के बड़े हॉल में हाना अपने लाल स्कूटर पर जॉर्ज से रेस लगाती जो अपने नीले स्कूटर पर होता। सर्दियों में हाना और जॉर्ज बर्फ के किले बनाते और स्की करते। पर हाना को सबसे अच्छा लगता था स्केटिंग करना,

बर्फ का किला बनाते बच्चे

और नोवे मेश्तो के जमे ताल पर वह अपने चक्करों और फिरकियों का खूब अभ्यास किया करती थी। कभी-कभी वह अपनी खास लाल स्केटिंग पोशाक पहनती जिसकी गर्दन और आस्तीनों के सिरे पर सफेद फर लगे हुए थे। वह कल्पना करती कि वह एक नाचने वाली राजकुमारी है। उसके माँ-पापा, उसके दोस्त और उसका भाई उसके प्रदर्शन और उसके सपने, दोनों की ही तारीफ करते थे।

चूँकि हाना के माँ-पापा हफ्ते में छह दिन काम करते थे, इसलिए रविवार की सुबह परिवार के लिए बड़ी खास हुआ करती थी। जागते ही जॉर्ज और हाना अपने माँ-पापा के बिस्तर में उनकी परों वाली रज़ाई में जा दुबकते। गर्मियों में रविवार की दोपहर वे कार पर सवार होकर पास के किले या महल में पिकनिक मनाने चल देते। ऐसे मौकों पर यदा-कदा उनके चाचा लुडविक और चाची हैड्डा भी साथ होते, जो नोवे मेश्तो में ही रहते थे। सर्दियों में वे स्ले (Sleigh) की सवारी करते या लम्बी दूरी तक स्की चलाते। हाना स्की चलाने में माहिर थी। नोवे मेश्तो से आठ किलोमीटर की दूरी पर स्थित गाँव (जहाँ एक बढ़िया चायघर था जिसमें स्वादिष्ट मुलायम पेस्ट्री मिला करती थी) तक की दौड़ में हाना ही अपने रिश्ते के भाई-बहनों से आगे होती, बावजूद इसके कि वह उम्र में उन सबसे छोटी थी।

अपनी विशेष लाल स्केटिंग पोशाक में हाना

पर 1938 के नववर्ष की पूर्व संध्या तक हवा में एक नया और डरावना एहसास होने लगा था। चारों ओर युद्ध की चर्चा थी। जर्मनी में एडॉल्फ हिटलर और नाज़ी सत्ता पर काबिज़ थे। उस साल की शुरुआत में हिटलर ने ऑस्ट्रिया पर हमला कर वहाँ कब्ज़ा कर लिया था। फिर उसने

हाना और जॉर्ज – दोनों ने काफी छोटी उम्र में स्केटिंग सीखी थी

अपनी सेनाएँ चेकोस्लोवाकिया के कुछ हिस्से में भेजी थीं। शरणार्थी – जो नाज़ियों से बचने को भागे थे – ब्रैडी परिवार का द्वार खटखटाने लगे। उन्हें पैसों, खाना और आश्रय की तलाश थी। माँ और पापा हमेशा उनका स्वागत गर्मजोशी से करते। पर बच्चे हैरान थे। कौन हैं ये लोग? हाना सोचा करती। ये यहाँ क्यों आते हैं? वे अपने घरों में क्यों नहीं रहना चाहते?

देर शाम जब हाना और जॉर्ज सोने के लिए भेज दिए जाते, माँ और पापा रेडियो के पास बैठकर खबरें सुनते। अक्सर उनके मित्र भी आते और वे देर रात तक सुनी हुई खबरों पर बातें करते। "अपनी आवाज़ें हम नीची रखेंगे, ताकि बच्चे जाग न जाएँ," वे कहते।

पर बड़ों की बातचीत इतनी गहन होती, उनकी बहसें इतनी गरमागरम होतीं कि उन्हें अँधेरे हॉल के लकड़ी के फर्श पर हाना और जॉर्ज के कदमों की आहट सुनाई न देती। दोनों बच्चे बैठक के बाहर अपनी खुफिया जगह पर आ छुपते। बच्चों ने ऑस्ट्रिया में नए यहूदी-विरोधी कानूनों की चर्चा सुनी। जर्मनी में क्रिस्टालनाक्ट (Kristallnacht) घटना का वर्णन सुना, जब नाज़ी हुड़दंगी यहूदियों के महल्लों में घुस गए थे और उनके घरों और दुकानों की खिड़कियाँ तोड़ डाली थीं, उनके प्रार्थना स्थल जला डाले थे, लोगों को सड़कों पर घसीटकर मारा-पीटा था।

"ऐसा सब यहाँ तो नहीं हो सकता, है ना?" हाना ने फुसफुसाकर अपने भाई से पूछा।

"श्श्श," जॉर्ज ने कहा। "अगर इस वक्त बात करेंगे तो वे सुन लेंगे और हमें फिर से सोने के लिए भेज दिया जाएगा।"

एक रात उनके पड़ोसी रॉट्ट साहब ने बड़ों के सामने चौंकाने वाला एक विचार रखा। अपनी बात शुरू करते हुए उन्होंने कहा, "हम सभी महसूस कर सकते हैं कि युद्ध छिड़ने वाला है। यहूदियों का यहाँ रहना खतरे से खाली नहीं है। हमें नोवे मेश्तो छोड़ देना चाहिए, चेकोस्लोवाकिया से निकल जाना चाहिए और अमरीका, फिलीस्तीन या कनाडा चले जाना चाहिए। कहीं भी। फौरन, बहुत देर हो उसके पहले ही।"

बाकी लोग भौंचक्के रह गए। "आप पगला गए हैं मिस्टर रॉट्ट?" किसी एक ने कहा। "यह हमारा घर है। हम यहीं के हैं।" और चर्चा वहीं थम गई।

मुश्किल वक्त होने के बावजूद, ब्रैडी परिवार 1939 के आने का जश्न मनाना चाहता था। नए साल की पूर्व संध्या पर टर्की (turkey), गुलमा/ सॉसेज (sausages), मसालेदार सलामी (salami) और मिठाई (pudding) खाने के बाद बच्चे भविष्यवाणी करने का परम्परागत खेल खेलने की तैयारी करने लगे। हाना, जॉर्ज और पास के कस्बों से आए उनके ममेरे-फुफेरे भाई-बहनों को अखरोट का आधा-आधा छिलका दिया गया जिसमें उन्होंने एक-एक छोटी मोमबत्ती लगा ली थी। कमरे के बीचों-बीच पानी का एक बड़ा तसला रख दिया गया। हरेक बच्चे ने उसमें अपनी अखरोट की नाव तैराई। 11 वर्षीय जॉर्ज की नाव डगमगाई, गोल-गोल घूमी, फिर झुकी और रुक गई। उसकी मोमबत्ती जलती रही। 8 साल की हाना ने अपनी नाव तैराई, एक पल को वह बिना काँपे चली, फिर डगमगाकर एक ओर पलट गई और मोमबत्ती की लौ पानी को छूते ही बुझ गई।

तोक्यो

मार्च 2000

जिस दिन से सूटकेस तोक्यो पहुँचा था, वह फूमिको और बच्चों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ था। दस वर्षीय अकीरा, जो सामान्यतया मज़ाक और छेड़खानी पसन्द करती थी, ने सोचने की कोशिश की कि अनाथ होना कैसा लगता होगा। माइको, जो उम्र में कुछ बड़ी थी, और दावतों की शौकीन थी तथा एक अच्छी तैराक थी, सूटकेस के सामने बिलकुल चुप हो जाती थी। सूटकेस उसे यह सोचने पर मजबूर करता कि अगर उसे अपने दोस्तों से दूर भेज दिया जाए तो उसे कैसा लगेगा।

केन्द्र में जितनी चीज़ें आई थीं, उनमें सिर्फ सूटकेस ही एक नाम से जुड़ा था। सूटकेस पर लिखी तारीख से फूमिको और बच्चों ने यह अन्दाज़ लगाया कि जब हाना को आउश्वित्ज़ भेजा गया होगा तो उसकी उम्र 13 साल की रही होगी। "मुझसे एक साल छोटी," एक किशोरी बोल पड़ी। "मेरी बड़ी बहन की उम्र की," अकीरा ने कहा।

फूमिको ने आउश्वित्ज़ संग्रहालय को फिर से पत्र लिखा। क्या वे उस सूटकेस वाली लड़की के बारे में कुछ जानने में उसकी मदद कर सकते हैं? नहीं, उन्होंने जवाब दिया। उन्हें भी उतना ही मालूम था जितना फूमिको को। फूमिको ने बच्चों को बताया। "तो कहीं और कोशिश कीजिए," माइको ने आग्रह किया। "कोशिश मत छोड़िए," अकीरा बोली। बच्चे फूमिको को जोश दिलाते रहे, "तलाश जारी रखिए"। फूमिको ने वादा किया कि वह ठीक यही करेगी।

फूमिको ने इज़राइल के हॉलोकॉस्ट संग्रहालय याद वाशेम (Yad vashem) को खत लिखा। ना, हमने हाना ब्रैडी नामक लड़की के बारे में कभी कुछ नहीं सुना है, निदेशक महोदय ने जवाब दिया। क्या अपने वॉशिंगटन डीसी में स्थित हॉलोकॉस्ट स्मृति संग्रहालय (Holocaust Memorial Museum) से सम्पर्क किया है? फूमिको ने फौरन वहाँ खत भेजा पर जवाब वही था। हाना ब्रैडी नामक लड़की के बारे में हमारे पास कोई जानकारी नहीं है। यह सब कितना निराश करने वाला था।

फिर, अचानक एक दिन फूमिको को आउश्वित्ज़ संग्रहालय से एक खत मिला। उन्हें कुछ मिला था। एक सूची में हाना का नाम दर्ज था। उससे पता चला था कि वह थेरेसिएनस्टाट (Theresienstadt) नामक स्थान से आउश्वित्ज़ आई थी।

नोवे मेश्तो

1939

15 मार्च 1939 को हिटलर की नाज़ी सेना चेकोस्लोवाकिया के बाकी हिस्सों में दाखिल हुई और ब्रेडी परिवार की ज़िन्दगी हमेशा-हमेशा के लिए बदल गई। नाज़ियों ने घोषणा की कि यहूदी शैतान हैं, दूसरों पर बुरा असर डालते हैं, वे खतरनाक हैं। अब से ब्रेडी परिवार और नोवे मेश्तो के बाकी यहूदियों को कुछ अलग नियमों के साथ जीना था।

यहूदी दिन के कुछ निश्चित घण्टों में ही अपने घरों से बाहर निकल सकते थे। वे केवल कुछ चुनिन्दा दुकानों और तयशुदा समय पर ही खरीददारी कर सकते थे। यहूदियों को यात्रा करने की इजाज़त नहीं थी, सो वे अपने काका-मामा, मौसी-बुआ या दादी-नानी से मिलने आसपास के गाँवों या शहरों में नहीं जा सकते थे। ब्रेडी परिवार को नाज़ियों को उन सभी चीज़ों के बारे में बताना पड़ा जो उनके पास थीं

जैसे-जैसे नाज़ी पाबन्दियाँ बढ़ती गईं, हाना और जॉर्ज एक-दूसरे का साथ देते रहे

– चित्र और मूर्तियाँ, गहने, छुरी-काँटे, बैंक खाते। उन्होंने हड़बड़ाहट में अपने सबसे बेशकीमती कागज़ों को अटारी के तख्तों के नीचे छिपा दिया। पापा का डाक टिकटों का संग्रह और माँ का चाँदी का सामान गैर-यहूदी मित्रों के पास छुपा दिया गया। पर परिवार का रेडियो उन्हें केन्द्रीय कार्यालय ले जाकर नाज़ी अफसरों के सुपुर्द कर देना पड़ा।

एक दिन हाना और जॉर्ज सिनेमाघर में "स्नो व्हाइट व सात बौने" देखने टिकट की कतार में लगे। टिकट खिड़की पर लगी एक तख्ती पर लिखा था, "यहूदियों को प्रवेश की इजाज़त नहीं है।" लाल चेहरों और आँखों में जलन लिए हाना व जॉर्ज उल्टे पाँव घर लौट आए। जब हाना घर में घुसी, वो बेहद नाराज़ और परेशान थी। "हमारे साथ हो क्या रहा है? मैं सिनेमा देखने क्यों नहीं जा सकती? मैं उस घोषणा को अनदेखा क्यों नहीं कर सकती?" माँ और पापा परेशान होकर एक-दूसरे को देखने लगे। कोई आसान जवाब उनके पास थे ही नहीं।

हर हफ्ते नई-नई बन्दिशें लगाई जाने लगीं। खेल के मैदानों में यहूदी नहीं। बाग-बगीचों में यहूदी नहीं। कुछ ही दिनों बाद हाना जिम नहीं जा सकती थी। स्केटिंग का तालाब भी प्रतिबन्धित घोषित कर दिया गया। उसकी दोस्त – जो सभी गैर-यहूदी थीं – पहले-पहल इन नए नियमों से उतनी ही भौंचक हुईं जितनी हाना। वे स्कूल में साथ-साथ बैठतीं जैसा हमेशा करती आई थीं और कक्षा में और एक-दूसरे के घरों के आँगन में अब भी शैतानियाँ और मौज-मस्ती करतीं। "हम हमेशा साथ रहेंगे, चाहे

पापा के साथ नन्हीं हाना

कुछ भी क्यों न हो जाए," हाना की पक्की सहेली मारिया ने वादा किया। "हम किसी दूसरे को यह तय नहीं करने देंगे कि हम किसके साथ खेल सकते हैं!"

पर धीरे-धीरे, कुछ महीनों में ही, हाना के सभी दोस्तों ने, यहाँ तक कि मारिया ने भी, स्कूल के बाद या रविवार को खेलने आना बन्द कर दिया। मारिया के माँ-पापा ने उसे हाना से दूर रहने को कहा था। उन्हें डर था कि यहूदी हाना के साथ दोस्ती की कीमत पूरे परिवार को चुकानी पड़ेगी। हाना अब बिलकुल अकेली पड़ गई।

हरेक दोस्ती के खत्म होने और हर नई पाबन्दी के लागू होने पर हाना और जॉर्ज को लगता कि उनकी दुनिया कुछ और सिकुड़ गई है। वे नाराज़ थे। वे दुखी थे और कुण्ठित भी। "हम क्या कर सकते हैं?" वे माँ-पापा से पूछते। "अब हम कहाँ जाएँ?"

माँ और पापा बच्चों का मन बहलाकर, मस्ती के नए तरीके खोजकर उनका ध्यान बँटाने की कोशिश करते। "हम खुशकिस्मत हैं," माँ ने उनसे कहा, "क्योंकि हमारे पास इतना बड़ा बगीचा है। तुम लोग लुका-छिपी खेल सकते हो। पेड़ों से झूल सकते हो। नए-नए खेल ईजाद कर सकते हो। कोठरियों में जासूसी खेल सकते हो। उस खुफिया सुरंग की छानबीन कर सकते हो। पहेलियाँ बूझ सकते हो। शुक्र मनाओ कि तुम्हारे पास एक-दूसरे का साथ तो है!"

हाना और जॉर्ज एक-दूसरे का साथ पाकर शुक्रगुज़ार थे और वे एक-दूसरे के साथ खेलते भी थे। फिर भी उन्हें पहले की तरह कई चीज़ों को न कर पाने का, कई जगहों पर न जा पाने का मलाल तो रहता ही था। बसन्त के एक खुशनुमा दिन जब सूरज दमक रहा था, वे दोनों अपने बगीचे में उकताए बैठे घास नोच रहे थे। अचानक हाना रो पड़ी। "यह तो अन्याय है," वह रोते हुए बोली। "मुझे इससे नफरत है। मैं चाहती हूँ सब पहले जैसा हो जाए।" उसने मुट्ठी भर घास नोची और हवा में उछाल दी। उसने अपने भाई की ओर देखा। उसे पता था कि वह भी उतना ही दुखी है जितनी वह खुद। "ज़रा रुको," जॉर्ज ने कहा। "मुझे कुछ सूझा है।" मिनटों में वह वापस लौटा, उसके हाथों में कागज़ों का पुलिन्दा, एक कलम, एक खाली बोतल और फावड़ा था।

"यह सब किसलिए?" हाना ने पूछा।

उसने कहा, "हमें जो कुछ परेशान कर रहा है, अगर उसे हम लिख डालें, तो शायद हम बेहतर महसूस करेंगे।"

"यह तो बेवकूफी है," हाना ने तुनककर कहा। "इससे बाग और खेल-मैदान थोड़े ही वापस मिलेंगे। इससे मारिया थोड़ी ना वापस आएगी।"

पर जॉर्ज अड़ा रहा। आखिर वह बड़ा भाई था और हाना को कोई बेहतर बात सूझी भी तो नहीं थी। सो अगले कई घण्टों तक दोनों बच्चे अपने मन का गुबार कागज़ों पर उतारते रहे। हाना ही ज़्यादा बोल रही थी और जॉर्ज वह सब लिखता चला गया। उन्होंने उन तमाम चीज़ों की सूची बनाई जिनकी कमी उन्हें खलने लगी थी, जिनके बारे में वे नाराज़ थे। फिर उन्होंने उन तमाम चीज़ों की भी सूची बनाई जो वे तब करने वाले हैं, जब ये अँधेरे दिन खत्म हो जाएँगे।

जब वे लिख चुके तो जॉर्ज ने उन कागज़ों को एक नली में लपेटकर बोतल में डाला और उस पर डाट लगा दिया। फिर दोनों घर की ओर लौटे और दोहरे झूले के पास रुक गए। वहाँ हाना ने एक बड़ा-सा गड्ढा खोदा। यह उनके दुख और उदासी को छुपाने की जगह बनने वाली थी। जॉर्ज ने बोतल गड्ढे में रखी और हाना ने उस जगह को मिट्टी से भर दिया। और जब यह सब खत्म हुआ दुनिया पहले से कुछ हल्की व रोशन लगने लगी, कम से कम उस दिन तो।

जो कुछ हो रहा था उसे समझना बड़ा मुश्किल था। खासकर अब क्योंकि परिवार का रेडियो भी छिन चुका था। पापा और माँ लन्दन, इंग्लैंड से हर रात आठ बजे प्रसारित होने वाले समाचारों पर निर्भर थे। इसी से वे हिटलर की काली करतूतों का हाल-चाल जान पाते थे। पर यहूदियों के लिए अब आठ बजे तक घर लौटना ज़रूरी बना दिया गया था। रेडियो सुनने पर पूरी तरह पाबन्दी थी और किसी भी नियम को तोड़ने पर सख्त सज़ा दी जाती थी। गिरफ्तार होने से सब डरते थे।

फिर पापा ने एक योजना बनाई जिससे नाज़ी नियमों से कन्नी काटी जा सके। उन्होंने अपने एक पुराने दोस्त से मदद माँगी, जो चर्च की बड़ी घड़ी की देखभाल करते थे। क्या वे शाम को घड़ी पन्द्रह मिनट पीछे कर सकेंगे? यों पापा अपने पड़ोसी के घर जाकर समाचार सुनकर, आठ बजे की घण्टी बजने तक (जो दरअसल सवा आठ बजे बजेगी) वापस घर लौट आए। चौराहे पर पहरा देने वाले नाज़ी दरबान को कोई शक न हुआ। और पापा बेहद खुश थे कि उनकी तरकीब काम कर गई है। पर दुर्भाग्य से रेडियो पर सुनी खबरें बुरी थीं। बेहद बुरी। नाज़ी हर लड़ाई को जीत रहे थे, हर मोर्चे पर आगे बढ़ रहे थे।

हाना और जॉर्ज

तोक्यो

मार्च 2000

थेरेसिएनस्टाट। फूमिको और बच्चों को अब यह पता चल गया था कि हाना थेरेसिएनस्टाट से आउश्वित्ज़ आई थी। फूमिको उत्तेजित थी। उसे हाना के बारे में यह पहली ठोस जानकारी मिली थी। पहला सुराग।

नाज़ियों ने चेकोस्लोवाकिया के एक शहर टेरेज़िन को थेरेसिएनस्टाट का नाम दिया था। वह एक सुन्दर-सा, छोटा शहर था, जिसमें दो बड़े किले थे। ये सैन्य व राजनीतिक बन्दियों को रखने के लिए उन्नीसवीं शताब्दी में बनाए गए थे। जब नाज़ियों ने चेकोस्लोवाकिया पर हमला किया, उन्होंने टेरेज़िन को थेरेसिएनस्टाट घेट्टो में तब्दील कर दिया, जो दीवारों से घिरा, पहरेदारों से लैस, ठसाठस भरा जेल शहर था। इसमें उन यहूदियों को रखा जाता था जिन्हें जबरन उनके घरों से खदेड़ दिया गया था। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान यहाँ 1,40,000 से ज़्यादा यहूदी भेजे गए थे, जिनमें 15,000 बच्चे भी थे।

फूमिको देर रात तक अन्धकार में डूबे केन्द्र में अपने दफ्तर की बत्ती जलाकर, थेरेसिएनस्टाट के बारे में जो कुछ भी मिलता उसे पढ़ा करती थी।

उसने जाना कि थेरेसिएनस्टाट में भयानक घटनाएँ घटी थीं। और आगामी कुछ सालों में घेट्टो में भेजे गए लगभग सभी लोगों को फिर से विस्थापित करके, रेलगाड़ियों में भरकर पूर्व में स्थित उन भयंकर यातना शिविरों में भेजा गया था, जिन्हें मौत के शिविर कहा जाने लगा था।

पर फूमिको ने यह भी जाना कि थेरेसिएनस्टाट में कई प्रेरणादायक व साहसी चीज़ें भी घटी थीं। वहाँ रहने वाले बड़ों में कई खास लोग थे – महान कलाकार, प्रसिद्ध संगीतकार, इतिहासकार, दार्शनिक, फैशन डिज़ाइनर, सामाजिक कार्यकर्ता। वे सब इसलिए थेरेसिएनस्टाट में थे क्योंकि वे यहूदी थे। उस घेट्टो की चहारदीवारी में आश्चर्यजनक प्रतिभा, प्रशिक्षण और ज्ञान भरा पड़ा था। नाज़ियों की ठीक नाक के

नीचे, जोखिम उठाकर, वहाँ के बाशिन्दों ने लुक-छिपकर बड़ों और बच्चों के सीखने-सिखाने, उत्पादन और प्रदर्शन करने की विस्तृत योजनाएँ बनाई व चलाई थीं। उन्होंने तय किया था कि वे अपने विद्यार्थियों को याद दिलाते रहेंगे कि – युद्ध के बावजूद, जकड़न भरे माहौल के बावजूद, सब कुछ के बावजूद – दुनिया सौन्दर्य की जगह है और हरेक इन्सान उस सौन्दर्य में इज़ाफा कर सकता है।

फूमिको को यह भी पता चला कि थेरेसिएनस्टाट के बच्चों को चित्र बनाना और रंग भरना भी सिखाया जाता था। और खास बात यह थी कि युद्ध के बाद भी इन बच्चों द्वारा बनाए गए 4,500 चित्र बचे रह गए थे। फूमिको का दिल तेज़ी से धड़कने लगा। क्या यह सम्भव था कि इन चित्रों में हाना ब्रैडी के बनाए एक या उससे अधिक चित्र हों?

नोवे मेश्तो

पतझड़ 1940, बसन्त 1941

हाना, उसकी माँ और जॉर्ज - खुशहाल ज़माने में

पतझड़ का मौसम अपने साथ हवा में ठिठुरन लाया और नई पाबन्दियाँ व कठिनाइयाँ भी।

हाना तीसरी कक्षा में जाना शुरू करने ही वाली थी कि नाज़ियों ने घोषणा की कि यहूदी बच्चे अब स्कूल नहीं जा सकेंगे। "अब मैं कभी अपने दोस्तों को नहीं देख पाऊँगी!" हाना ने उस समय माँ और पापा को रोकर यह बात कही, जब उन्होंने उसे यह बुरी खबर सुनाई। "अब मैं बड़ी होकर टीचर भी नहीं बन पाऊँगी!" उसका हमेशा से यही सपना रहा था कि वह कक्षा में सामने खड़ी होगी और सब उसकी कही बातों को ध्यान से सुनेंगे।

माँ-पापा इस बात पर दृढ़ थे कि हाना और उसका भाई अपनी पढ़ाई जारी रखें। किस्मत से उनके पास इतने पैसे थे कि पास के गाँव की एक युवती को हाना की

शिक्षिका और एक बुज़ुर्ग शरणार्थी प्रोफेसर को जॉर्ज के शिक्षक के रूप में नियुक्त कर सकें।

माँ अपना मिज़ाज खुश रखने की कोशिश करतीं। "सुप्रभात, हाना," सूरज के उगने पर वे आवाज़ देतीं। "नाश्ते का समय हो गया है। 'स्कूल' के लिए देरी हो जाएगी।" हर सुबह हाना खाने के कमरे की मेज़ पर अपनी नई शिक्षिका से मिलती। वे एक सहृदय महिला थीं और हाना को प्रोत्साहित करने के लिए पढ़ाई, लिखाई और गणित करवाने की हर सम्भव कोशिश करती थीं। वे अपने साथ एक छोटा-सा ब्लैकबोर्ड लातीं जिसे एक कुर्सी पर टिका देतीं। कभी-कभार वे हाना को उस पर चॉक से चित्र बनाने देतीं और डस्टर को झाड़ने भी देतीं। पर इस स्कूल में न कोई संगी-साथी थे, न कोई हँसी-ठिठोली, और न ही विश्राम का घण्टा। हाना को अपने पाठों पर ध्यान देना और भी मुश्किल लग रहा था। जाड़े के अँधकार में, मानो दुनिया ब्रैडी परिवार के इर्द-गिर्द सिकुड़ी जा रही थी।

और वाकई, बसन्त के आगमन के साथ मुसीबत आ गई। मार्च 1941 में माँ को हिटलर की खुफिया राजकीय पुलिस, गेस्टापो, ने गिरफ्तार कर लिया।

घर पर एक फरमान आया कि माँ को सुबह नौ बजे पास के शहर इगलाउ में गेस्टापो मुख्यालय में हाज़िर होना है। सुबह ठीक समय पर वहाँ पहुँचने के लिए उन्हें आधी रात को निकलना था। उनके पास केवल एक दिन था जिसमें उन्हें सब व्यवस्था कर देनी थी और अपने परिवार से विदा भी लेनी थी।

माँ ने हाना और जॉर्ज को बैठक में बुलाया, सोफे पर बैठीं और बच्चों को अपने पास खींचा। उन्होंने बच्चों से कहा कि वे कुछ समय के लिए जा रही हैं। हाना उनके कुछ और करीब आ गई। "मेरे जाने के बाद तुम अच्छे बच्चे बनकर रहना," उन्होंने कहा। "पापा की बात ध्यान से सुनना और उनका कहा मानना। मैं खत लिखूँगी," उन्होंने वादा किया। "क्या तुम जवाब दोगे?"

जॉर्ज ने आँखें फेर लीं। हाना सिहर उठी। बच्चों को इतना सदमा पहुँचा कि वे जवाब तक न दे सके। उनकी माँ ने उन्हें पहले कभी अकेला नहीं छोड़ा था।

उस रात जब माँ हाना को बिस्तर में लिटाने आईं, उन्होंने उसे कसकर थामा। माँ ने अपनी सुकून भरी उँगलियाँ हाना के बालों पर फिराईं, ठीक वैसे जैसे वे तब करती थीं जब हाना बहुत छोटी थी। उन्होंने बार-बार हाना की पसन्दीदा लोरी गाई – कई बार। हाना माँ की गर्दन के गिर्द बाँहें डाले सो गई। अगली सुबह जब हाना जागी, माँ जा चुकी थीं।

तोक्यो

अप्रैल 2000
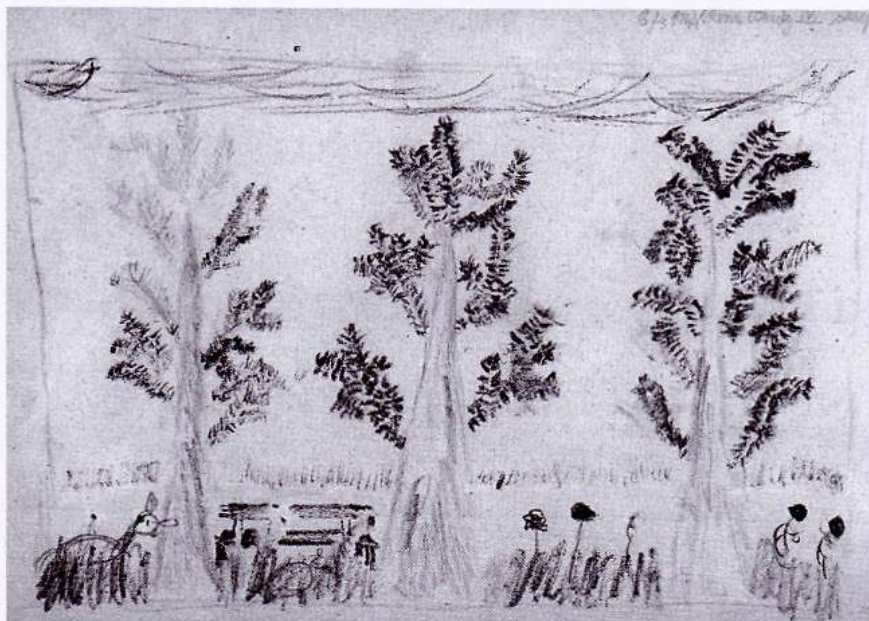
थेरेसिएनस्टाट में हाना की बनाई एक तस्वीर

जब एक चपटा पार्सल उनके तोक्यो के दफ्तर में आया तो फूमिको को यकीन ही नहीं हुआ। कुछ हफ्ते पहले ही तो उन्होंने टेरेज़िन घेट्टो संग्रहालय को खत लिखा था। वह अब चेक गणतंत्र कहलाने वाले देश में था। फूमिको ने अपने खत में लिखा था कि वह और उसके केन्द्र के बच्चे कितनी बेसब्री से किसी भी ऐसी जानकारी या चीज़ की तलाश में हैं जो उन्हें हाना ब्रैडी से और करीब से जोड़ सके। संग्रहालय के लोगों ने बताया कि वे हाना की व्यक्तिगत कहानी के बारे में कुछ भी नहीं जानते, पर बच्चों के बनाए ढेरों चित्रों को शिविर में छिपा दिए जाने के बारे में ज़रूर जानते हैं। उनमें से कई चित्र प्राग में स्थित यहूदी संग्रहालय में अब प्रदर्शित हैं।

फूमिको ने पार्सल खोला। वह इतनी उत्तेजित थी कि उसके हाथ काँप रहे थे। पार्सल में पाँच चित्रों के फोटो थे। उनमें से एक किसी बाग और उसमें रखी एक बेंच का रंगीन चित्र था। दूसरे में कुछ लोग नदी किनारे पिकनिक मना रहे थे। बाकी चित्र पेंसिल और चारकोल से बने थे। एक में पेड़ था, दूसरे में कुछ खेत-मज़दूर घास सुखा रहे थे और तीसरे में कुछ लोग सूटकेस थामे रेलगाड़ी से उतर रहे थे। हरेक चित्र के ऊपरी दाहिने कोने पर 'हाना ब्रैडी' का नाम दर्ज था।

नोवे मेश्तो

पतझड़ 1941

चूँकि हाना ने माँ से वादा किया था, उसने अच्छा व्यवहार करने की भरसक कोशिश की। वह भरसक पापा की मदद करती, और अपने पाठ याद करती। बोश्का, उनकी चहेती घर की देखभाल करने वाली और रसोइया, हाना का पसन्दीदा खाना पकाती और मीठे पकवान की ज़्यादा मात्रा उसे परोसती। पर हाना को माँ की बेहद याद आती, खासकर रात को। कोई दूसरा उसकी माँ के स्पर्श के जैसे उसके बाल कहाँ सहला सकता था। कोई भी तो उसकी लोरी नहीं गा सकता था। और उसकी माँ का वह ज़ोरदार ठहाका – उसकी कमी तो सबको खलती थी।

बच्चों को पता चला कि माँ रेवन्सब्रुक नामक एक जगह में हैं, यह जर्मनी में महिलाओं का एक यातना शिविर था। "क्या वह बहुत दूर है?" हाना ने पापा से पूछा।

"माँ वापस कब लौटेगी?" जॉर्ज ने जानना चाहा। पापा ने दोनों बच्चों को भरोसा दिलाया कि वे माँ को छुड़ाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं।

एक दिन हाना अपने कमरे में पढ़ रही थी जब उसने बोश्का को आवाज़ लगाते सुना। उसने आवाज़ को अनसुना कर दिया। उस वक्त घर के कामों में मदद करने की उसकी कोई इच्छा नहीं थी। और काम के अलावा बोश्का भला क्यों बुलाती? पर बोश्का आवाज़ लगाती रही। "हाना, हाना? कहाँ हो तुम? जल्दी आओ! डाकघर में तुम्हारे लिए कोई बहुत ही खास चीज़ आई है।"

इतना सुनना था कि हाना ने अपनी किताब पटक दी। क्या यह वही होगा जिसकी वह इतनी बेसब्री से उम्मीद लगाए बैठी थी? वह घर से निकली और ताबड़तोड़ डाकघर के रास्ते दौड़ पड़ी। वह खिड़की के पास पहुँची। "क्या आपके पास मेरे लिए कुछ आया है?" उसने पूछा। उस पार बैठी महिला ने एक छोटा भूरा पैकेट खिड़की से हाना की ओर सरका दिया। माँ की लिखावट देखकर हाना का दिल उछल पड़ा। पैकेट खोलते समय उसकी उँगलियाँ काँप रही थीं। अन्दर एक छोटा भूरा दिल था। वह डबलरोटी से बना था और उस पर "एच बी" उकेरा गया था। साथ था एक खत।

मेरी प्यारी बच्ची, तुम्हें जन्मदिन की बधाइयाँ। मुझे दुख है कि इस साल मोमबत्तियाँ बुझाने में मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकूँगी। पर जो दिल भेज रही हूँ, वह तुम्हारे ब्रेसलेट पर लटकाने के लिए है। क्या तुम्हारे कपड़े छोटे पड़ने लगे हैं? डैडी और जॉर्जी से कहना कि वे चाचियों-मौसियों से कहें और मेरी बड़ी-सी बिटिया के लिए नए कपड़े सिलवाएँ। मैं हमेशा तुम्हारे और तुम्हारे भाई के बारे में सोचा करती हूँ। मैं ठीक हूँ। क्या तुम अच्छी लड़की बन रही हो? मुझे खत लिखोगी ना? उम्मीद है, तुम और जॉर्ज ठीक से पढ़ाई कर रहे होगे। मैं ठीक हूँ। मुझे तुम्हारी बेहद याद आती है, प्यारी हानिच्का। मैं तुम्हें चूम रही हूँ।

प्यार, माँ। मई 1941। रेवन्सब्रुक।

हाना ने अपनी आँखें मूँदीं और उस नन्हे भूरे दिल को मुट्ठी में भींचा। उसने कल्पना की कि उसकी माँ उसके बगल में खड़ी है।

उस पतझड़ एक और मुसीबत आन पड़ी। एक दिन पापा कपड़े के तीन चौकोर टुकड़े लिए घर लौटे। हरेक पर पीले धागे से डेविड का सितारा बना था और उसके बीचों-बीच एक शब्द था, 'यूडे' – यहूदी।
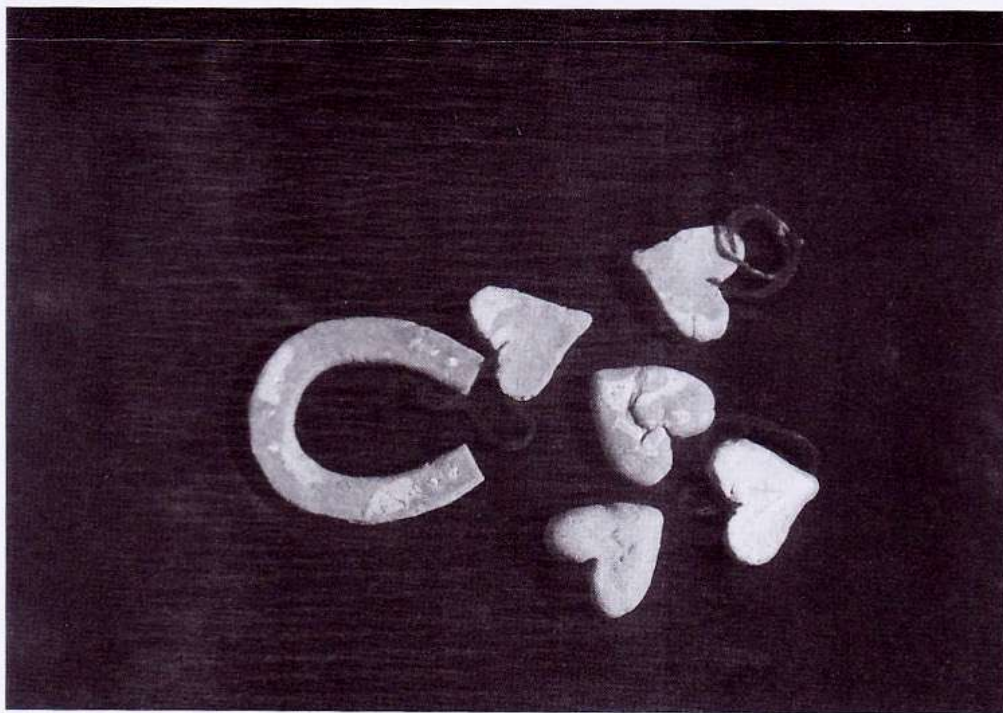
डबलरोटी से बने वे तोहफे जो हाना की माँ ने गेस्टापो द्वारा ले जाए जाने के बाद परिवार को भेजे

यहूदियों को कहा गया कि वे जब भी घर से बाहर निकलें ऐसा कपड़े का पीला सितारा पहनकर निकलें

"बच्चो यहाँ आओ," पापा ने रसोई की दराज़ से कैंची निकालते हुए कहा। "हमें इन सितारों को काटकर अपने कपड़ों पर टाँकना है। जब भी हम घर से बाहर निकलें हमें इसे लगाए रखना होगा।"

"क्यों?" हाना ने पूछा। "लोग तो पहले से ही जानते हैं कि हम यहूदी हैं।"

"हमें यह करना ही होगा," पापा ने जवाब दिया। वे इतने हताश, उदास और थके हुए लग रहे थे कि हाना और जॉर्ज ने कोई बहस नहीं की।

उस दिन से हाना ने घर से निकलना कम कर दिया। वह सब के सामने उस पीले बिल्ले को पहनने से बचने के लिए हर सम्भव कोशिश करती। उसे उस सितारे से नफरत थी। कितना अपमान महसूस होता था। कितनी शर्म आती थी। क्या इतना काफी नहीं कि उनसे उनका पार्क, उनकी तलैया, उनका स्कूल और उनके दोस्त छिन चुके थे, बच्चे सोचते? पर अब जब भी वे घर से निकलते, वह सितारा उनके कपड़ों पर टँगा होता।

उनके कस्बे का एक यहूदी आदमी यह हुक्म मानने को तैयार नहीं था। ढेर सारे नियमों और पाबन्दियों से वह तंग आ चुका था। सो 1941 के सितम्बर माह के आखिरी दिनों में वह दुस्साहस से भरा घर से निकल पड़ा। उसने कपड़े से सितारा काटा नहीं था, बल्कि कपड़े के पूरे चौकोर टुकड़े को ही अपने कोट पर टाँग लिया था। खिलाफत के इस अदने से कारनामे पर नोवे मेश्तो के नाज़ी अफसर का फौरन ध्यान गया। वह आग-बबूला हो गया। उसने घोषणा की कि नोवे मेश्तो को 'यूडनफ्रेई', यहूदी-मुक्त करना है, फौरन।

अगली ही सुबह एक बड़ी काली गाड़ी ब्रेडी परिवार के घर के सामने आ खड़ी हुई। इसे एक नाज़ी अफसर चला रहा था। गाड़ी में चार सहमे-डरे हुए यहूदी आदमी पहले से बैठे थे। दरवाज़ा खटका। पापा ने दरवाज़ा खोला। हाना और जॉर्ज उनके पीछे खड़े थे। गेस्टापो अफसर ने चिल्लाकर पापा को फौरन बाहर निकलने का हुक्म दिया। हाना और जॉर्ज को अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ। वे भौंचक, सहमे और मौन खड़े रहे। पापा ने दोनों को गले लगाया, उन्हें साहसी बनने को कहा। और फिर, वे भी चले गए।

तोक्यो

बसन्त 2000

फूमिको हाना के चित्रों से मोहित थी। वह जानती थी कि उनके ज़रिए बच्चे बेहतर कल्पना कर सकेंगे कि हाना कैसी लड़की थी। वे आसानी से उसके स्थान पर खुद को रख सकेंगे। फूमिको ने ठीक सोचा था।

केन्द्र में आने वाले वालंटियर बच्चे हाना पर पहले से भी ज़्यादा ध्यान देने लगे। माइको की अगुवाई में उनमें से कुछ ने एक समूह बनाया जिसका लक्ष्य था बाकी
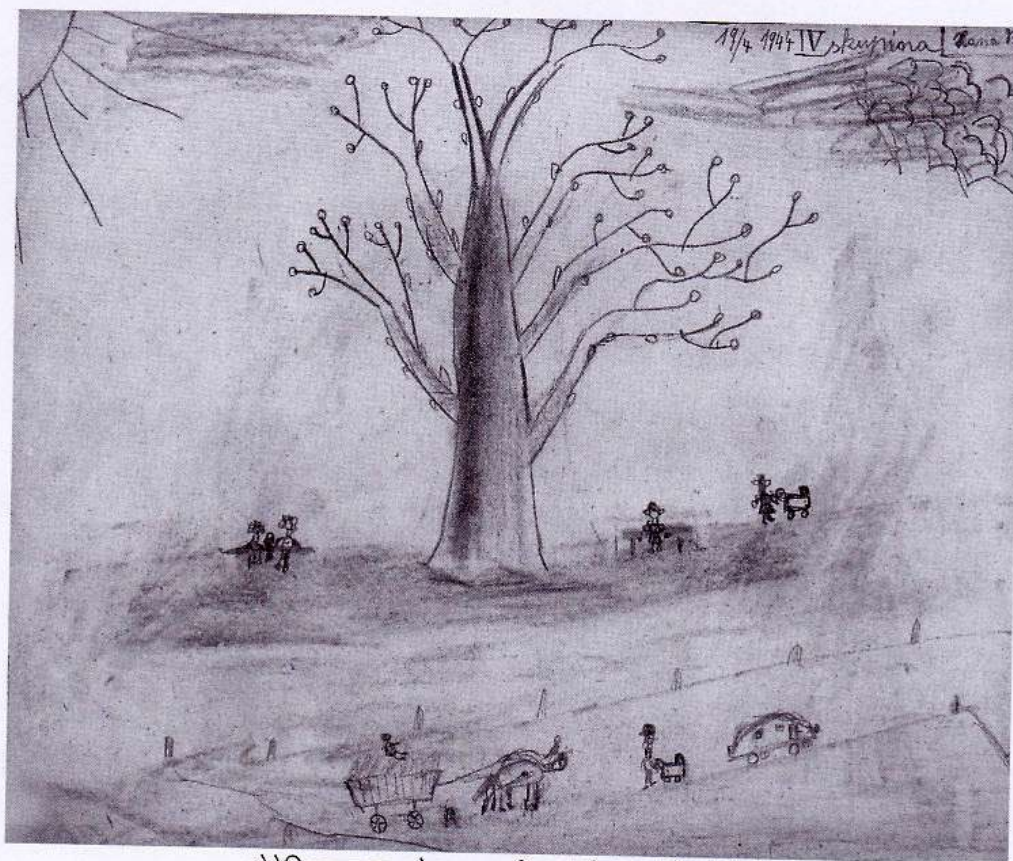
थेरेसिएनस्टाट से हाना की बनाई एक और तस्वीर

बच्चों को वे सारी जानकारियाँ देना जो वे खुद जान रहे थे। उन्होंने अपने क्लब का नाम रखा 'नन्हे पंख (small wings)'। महीने में एक बार वे बैठक कर अपने अखबार की योजना बनाते। हरेक सदस्य की एक निश्चित भूमिका थी। बड़े बच्चे लेख लिखते। छोटों को चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता। कुछ दूसरे कविताएँ लिखते। फूमिको की मदद से वे अपना अखबार दूर-दराज़ के स्कूलों में भेजते, ताकि वे भी हॉलोकॉस्ट नरसंहार के इतिहास और हाना के बारे में उनकी खोजबीन को जानें।

उनकी सबसे तीव्र इच्छा यह जानने की थी कि दरअसल हाना दिखती कैसी थी। वे उस नन्ही लड़की की शक्ल भी देखना चाहते थे जिसकी कहानी जानने को वे इस कदर उत्सुक थे। फूमिको को एहसास हुआ कि अगर उसे हाना की कोई फोटो मिल जाए तो वह बच्चों के लिए एक असली इन्सान के रूप में जी उठेगी। फूमिको ने ठान लिया था कि वह तलाश जारी रखेगी।

अब जब उसके पास कुछ चित्र, एक मोज़ा, एक जूता, एक स्वेटर और हाना का सूटकेस मौजूद थे, फूमिको को लगा कि जिस प्रदर्शनी पर वह एक अर्से से काम कर रही है, उसे लगाने का समय आ गया है – 'बच्चों की नज़र से नरसंहार'।

नन्हे पंख

नोवे मेश्तो

सर्दियाँ 1941-1942

अब सिर्फ दो बच्चे ही थे। माँ-पापा नहीं थे। जॉर्ज ने अपनी एक बाँह अपनी दस साल की बहन के गिर्द रखी और उसकी देखभाल करने का वादा किया। बोश्का, उनके घर की देखभाल करने वाली और रसोइया ने, उनका ध्यान बँटाने की कोशिश में उनके लिए अच्छा खाना पकाया, हल्की-फुल्की बातें कीं। पर सब बेअसर था। बच्चे दुखी थे और बेहद डरे हुए थे।

पापा की गिरफ्तारी के कुछ ही घण्टों बाद दरवाज़ा फिर खटका। हाना का दिल तेज़ी से धड़कने लगा। जॉर्ज ने थूक निगला। अब वे किसके लिए आए होंगे? पर जब बच्चों ने दरवाज़ा खोला तो देखा कि फूफा लुडविक खड़े हैं, उनके प्यारे फूफा लुडविक। "मुझे अभी-अभी यह बुरी खबर मिली," एक हाथ से हाना और दूसरे से जॉर्ज को गले लगाते हुए उन्होंने कहा। "तुम दोनों मेरे साथ चल रहे हो। तुम्हें परिवार के साथ होना चाहिए, ऐसे लोगों के साथ जो तुम्हें प्यार करते हैं।"

फूफा लुडविक ईसाई थे। उन्होंने पापा की बहन से शादी की थी। क्योंकि वे यहूदी नहीं थे, नाज़ियों के सीधे निशाने पर नहीं थे। पर जॉर्ज और हाना को ले जाने का काम कोई हिम्मतवाला ही कर सकता था। गेस्टापो यह घोषणा कर चुका था कि जो भी यहूदियों की मदद करेगा उसकी उसे भयानक सज़ा भुगतनी होगी।

फूफा लुडविक ने बच्चों से कहा कि वे अपनी सबसे कीमती चीज़ें साथ ले लें। हाना ने अपनी आदमकद गुड़िया, जिसका नाम नाना था, अपने साथ ले ली। यह गुड़िया उसके पास तब से थी जब वह पाँच साल की थी। जॉर्ज ने परिवार के सारे फोटो इकट्ठे किए। दोनों ने एक-एक सूटकेस में अपने कपड़े ठूँसे। हाना ने एक बड़ा भूरा सूटकेस चुना जिसे वह पहले भी पारिवारिक यात्राओं के समय ले जाया करती थी। सूटकेस में अन्दर की तरफ लगा बिन्दीदार कपड़ा उसे बेहद प्यारा लगता था। जब सब कुछ बाँध लिया गया, तो उन्होंने बत्तियाँ बुझाईं और बाहर निकलकर दरवाज़ा बन्द कर दिया।
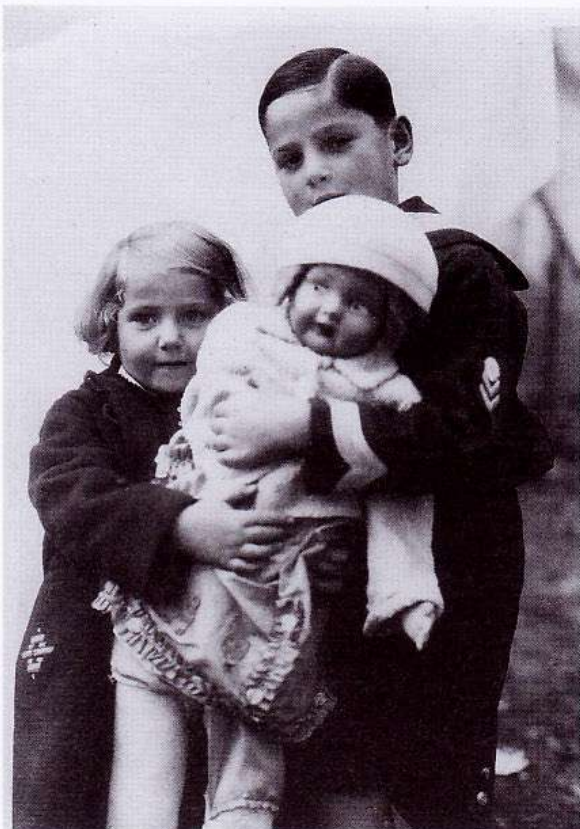
नन्ही हाना, जॉर्ज और अपनी गुड़िया नाना के साथ जो लगभग हाना जितनी ही बड़ी थी

उस रात, बुआ और फूफा ने हाना को एक बड़े से बिस्तर पर लिटाया और परों से भरी रज़ाई ओढ़ाई। "जब तक तुम्हारे माँ और पापा वापस नहीं आ जाते हम तुम्हारी देखभाल करेंगे हाना," उन्होंने वादा किया। "और अगर तुम बीच रात में जाग जाओ तो हम तुम्हें बाहर हॉल में ही सोए मिल जाएँगे।"

पर बत्तियाँ बुझने के काफी बाद भी हाना जागी रही, अपरिचित अँधेरे में आँखें मिचमिचाती रही। नया बिस्तर था। और दुनिया – जो अब खतरों से भरी थी – उलट-पुलट हो चुकी थी। आगे क्या होगा? हाना भयभीत होकर सोचती रही। आखिरकार उसने अपनी आँखें मूँदीं और सो गई।

अगली सुबह हाना की आँखें अपनी खिड़की के बाहर ज़ोर-ज़ोर से भौंकने की आवाज़ के साथ खुलीं। उसका दिल धड़कने लगा। अब क्या गड़बड़ है? फिर उसने आवाज़ पहचान ली। यह तो सिल्वा थी, उनकी वफादार कुतिया। वह रास्ता खोजती हुई शहर पार करके हाना और जॉर्ज के पास आ पहुँची थी। कम से कम कुछ दोस्त तो सच्चे बने रहते हैं, हाना ने सोचा। यह एक छोटा-सा दिलासा था।
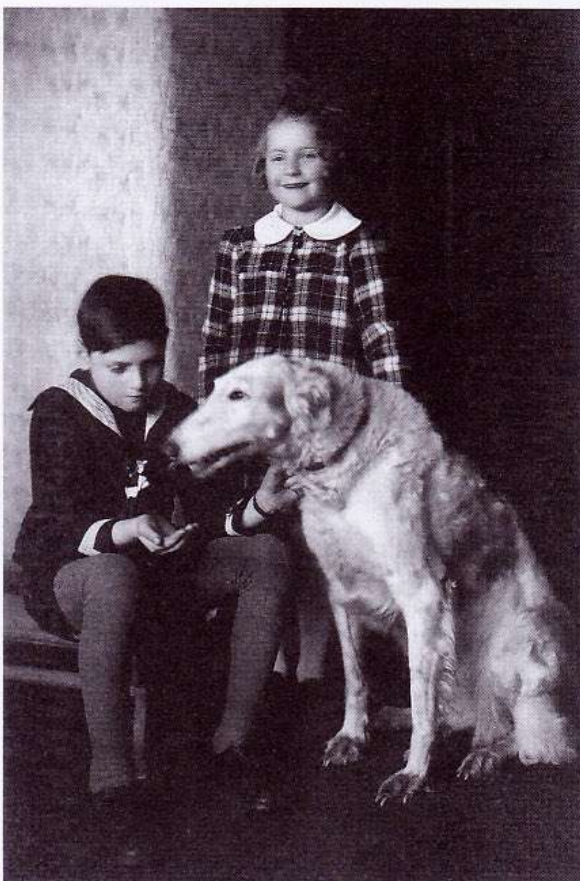
जॉर्ज और हाना उनकी पालतू कुतिया – सिल्वा – के साथ जो भेड़िए को भगाने वाली (wolfhound) थी

बुआ हेड्डा और फूफा लुडविक का घर छोटा पर आरामदेह था। पिछवाड़े एक सुन्दर-सा छोटा बगीचा था। घर महल्ले के स्कूल के बिलकुल पास था। जॉर्ज और हाना हर रोज़ बच्चों को बस्ते उठाए, हँसते, खेलते, पढ़ने जाते देखते। "मैं भी जाना चाहती हूँ!" हाना दुख और कुण्ठा से पैर पटकते हुए कहती। पर कोई कुछ कर नहीं सकता था।

आने वाले महीनों में फूफा लुडविक और बुआ हेड्डा ने बच्चों को व्यस्त रखने की भरसक कोशिश की। जॉर्ज घण्टों तक लकड़ी चीरता। हाना किताबें पढ़ती और खेल खेलती। उसके फुफेरे बहन-भाई वेरा और जिरी उसे पसन्द करते थे। कभी-कभार वह उनके साथ चर्च भी जाती।

हाना और उसके प्यारे और साहसी फूफा – लुडविक

और हर दोपहर, खाना खाने के समय हाना और जॉर्ज अपने पुराने घर जाते और बोश्का के साथ अपना जाना-पहचाना खाना खाते। बोश्का उन्हें बहुत लाड़ करती, उन्हें गले लगाती और चूमती। वह उन्हें याद दिलाती कि उसने उनके माँ-पापा को वादा किया था कि उन्हें अच्छे से खिला-पिलाकर स्वस्थ रखेगी।

कुछ-कुछ हफ्तों बाद पापा का लिखा खत मिलता। उन्हें इगलाउ (Iglau) की गेस्टापो जेल में कैद रखा गया था। जॉर्ज अपनी बहन को खत के केवल हँसी-खुशी वाले हिस्से ही सुनाता। जॉर्ज को लगता कि जेल की कठोर परिस्थितियाँ और रिहा होने की पापा की बेचैनी को पूरी तरह से जानने के लिए हाना बहुत छोटी है। बहरहाल, नाज़ियों द्वारा वतनबदर किए जाने के लिए वह बहुत छोटी नहीं मानी गई।

खेत पर मदद करते हाना
और जॉर्ज
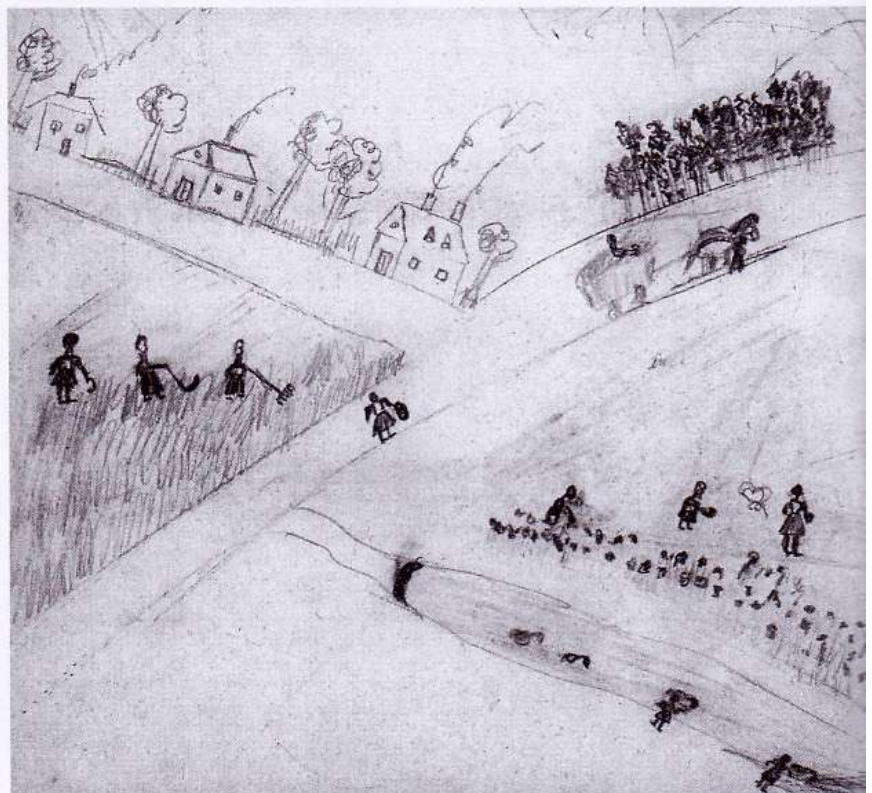
बाद में, थेरेसिएनस्टाट में हाना
ने खेत पर काम करते लोगों
की यह तस्वीर बनाई

नोवे मेश्तो

मई 1942

एक दिन बुआ हेड्डा और फूफा लुडविक के घर एक फरमान आया। हाना और जॉर्ज को आदेश दिया गया था कि वे 14 मई 1942 को नोवे मेश्तो से पचास किलोमीटर दूर ट्रेबिक स्थित विस्थापन केन्द्र में हाज़िर हों। फूफा लुडविक को इसी बात का डर था। उन्होंने हाना और जॉर्ज को अपने कमरे में बुलाया और वह फरमान पढ़कर सुनाया। फिर उन्होंने इस बुरी खबर को यथासम्भव सकारात्मक बनाने की कोशिश की। "तुम एक यात्रा पर जा रहे हो," उन्होंने कहा। "एक साथ! तुम ऐसी जगह जाओगे जहाँ ढेरों दूसरे यहूदी होंगे, साथ खेलने को बहुत सारे बच्चे भी होंगे। हो सकता है तुम्हें वहाँ सितारा भी नहीं पहनना पड़े।" जॉर्ज और हाना ने कोई जवाब नहीं दिया। दोनों फिर से जड़ से उखाड़े जाने और अपनी बुआ व फूफा को छोड़ने से बेहद दुखी थे।

हाना भयभीत थी। जब बोश्का इस अजीब-सी यात्रा की तैयारी में मदद करने आई, हाना ने उस पर ढेरों सवाल दागे। "हमारे माँ-पापा कहाँ हैं? हम उनसे कब मिलेंगे? हम आखिर कहाँ जा रहे हैं? हम अपने साथ क्या ले जा सकते हैं?" बोश्का के पास जवाब नहीं थे। बोश्का ने हाना को बताया कि वह भी नोवे मेश्तो छोड़कर अपने भाई के खेत पर रहने चली जाएगी।

हाना ने बिस्तर के नीचे से अपना बड़ा भूरा सूटकेस निकाला जिस पर लाल बिन्दियों वाले कपड़े का अस्तर था। उसने एक स्लीपिंग बैग रखा, इस उम्मीद में कि चाहे उन्हें कितनी दूर भी भेज दिया जाए उसे घर की खुशबू आती रहे। जॉर्ज ने भी यही किया। कपड़ों के बीच में खाने के लिए मसालेदार मांस के टुकड़े, चीनी और यादगार बतौर कुछ चीज़ें भी रखीं।

फूफा लुडविक इन प्यारे बच्चों को भेजने से दुखी थे। उन्होंने एक बग्घीवाले से कहा कि वह उन्हें विस्थापन केन्द्र छोड़ आए। वे खुद यह काम करने की हिम्मत नहीं जुटा सके। बुआ और फूफा ने हाना और जॉर्ज को विदा करते समय आँसू छिपाने की

JUDISCHE KULTUSGEMEINDE IN PRAG
ŽIDOVSKÁ NÁBOŽENSKÁ OBEC V PRAZE

Herrn, Frau, Fräulein
Pan, paní, slečna

Brady Hanna

100.436

Neustadtl Mähr.

13

Diese Vorladung ist mit Genehmigung der Zentralstelle für jüdische Auswanderung Prag (Dienststelle des Befehlshabers der Sicherheitspolizei beim Reichsprotektor in Böhmen und Mähren) als Reisegenehmigung anzusehen.

Tato obsílka platí za cestovní povolení na základě schválení Zentralstelle für jüdische Auswanderung Prag (Dienststelle des Befehlshabers der Sicherheitspolizei beim Reichsprotektor in Böhmen und Mähren).

Uber Weisung der Zentralstelle für jüdische Auswanderung Prag haben Sie sich

Z nařízení Zentralstelle für jüdische Auswanderung Prag dostavte se

am - dne 30 IV. 1942

um - v 10 Uhr - hod.

in - do Trebitsch

einzufinden.

Jede vorgeladene Person hat mitzubringen
1. Geburtschein,
2. Bürgerlegitimation (Kennkarte oder einen anderen Beleg über die Staatsbürgerschaft),
3. diese Vorladung.

Neben diesen Personaldokumenten hat jede Person sämtliche Lebensmittelkarten mitzubringen.

Každá předvolaná osoba přinese s sebou
1. rodný list,
2. občanskou legitimaci (průkaz totožnosti nebo jiný úřední doklad o státní příslušnosti),
3. toto předvolání.

Kromě těchto osobních dokladů, přinese každá osoba všechny potravinové lístky s sebou.

Um die vorgeschriebene Vorladungsstunde einhalten zu können, werden Sie den

Abyste dodržel(a) hodinu, na kterou jste byl(a) předvolán(a), použijete vlaku, který odjíždí

29.4.42 um - v 18:03 Uhr - hod.

von - z Neustadtl über Saar

abgehenden Zug benützen.

Zur Rückreise müssen Sie, den

K návratu musíte nastoupiti do vlaku, který opouští

um - v 16:38 Uhr - hod.

vom Vorladungsort abgehenden Zug benützen.

místo předvolání.

Kinder bis zu 4 Jahren müssen nicht persönlich erscheinen, doch müssen ihre Eltern oder verantwortl. Aufseher, sowohl die Personaldokumente, als auch diese Vorladung und die Lebensmittelkarte vorlegen. Kranke und alte Personen, die nicht persönlich erscheinen können, müssen neben allen Dokumenten ein amtsärztliches Zeugnis vorlegen lassen. Dieses Zeugnis muß eine genaue Diagnose der Krankheit enthalten.

Děti do 4 let se nemusí osobně dostaviti, avšak jejich rodiče nebo jejich zodpov. dozorce musí předložiti jak jejich osobní doklady, tak i toto předvolání a všechny potravinové lístky. Nemocné a staré osoby, které se nemohou osobně dostaviti, dejí za sebe předložiti všechny doklady a mimo to vysvědčení úředního lékaře. Toto vysvědčení musí obsahovati přesnou diagnosu nemoci.

JUDISCHE KULTUSGEMEINDE IN PRAG
ŽIDOVSKÁ NÁBOŽENSKÁ OBEC V PRAZE

A 4/212 - V - 1n - III/42 - 20/m - A. D.

यह वह दस्तावेज़ है जो हाना को 30 अप्रैल 1942 को अपने फूफा के घर से बेघर होने का आदेश देता है। उसे 14 मई को थेरेसिएनस्टाट भेज दिया गया था।

भरसक कोशिश की। उन्होंने वादा किया कि युद्ध खत्म होने के बाद वे नोवे मेश्तो में उनका इन्तज़ार करेंगे। जब चालक ने घण्टियाँ बजाईं और घोड़े घर से चल पड़े, उस वक्त किसी ने एक भी शब्द नहीं कहा।

कुछ घण्टों बाद बग्घीवाले ने हाना और जॉर्ज को एक बड़े से गोदाम के सामने उतार दिया। अन्दर जाने वाले गेट के पास लगी कतार में वे भी लग गए। नाम लिखवाने वाली मेज़ पर पहुँचने पर उन्होंने अपने नाम भौंहें सिकोड़े बैठे एक सैनिक को बताए। उसने हाथ हिलाकर उन्हें उस अँधेरे, हवारहित इमारत में जाने का इशारा किया।

इमारत के अन्दर का फर्श चटाइयों से ढँका था। हाना और जॉर्ज एक कोने में बिछी दो चटाइयों पर बैठ गए। आसपास देखने पर पता चला कि वहाँ दूसरे बच्चे कम ही थे। पर सैकड़ों यहूदी आदमी और औरतें थे जो थेरेसिएनस्टाट नामक जगह पर भेजे जाने का इन्तज़ार कर रहे थे। उन सभी को वहाँ निर्वासित किया जा रहा था।

चार दिन व चार रातें हाना और जॉर्ज ने उस गोदाम में बिताईं। अपने सूटकेस में रखा खाना खाकर और चटाइयों पर सोकर गुज़ारा किया। यद्यपि कुछ बड़ों ने उनसे बातचीत करने की कोशिश की, पर हाना और जॉर्ज का मन किसी से बात करने का न था। एक-दूसरे का साथ था सो अपना समय उन्होंने पढ़ते, बतियाते, झपकियाँ लेते और घर के बारे में सोचते हुए गुज़ारा। इसी गोदाम में 16 मई 1942 के दिन चन्द मीठी गोलियों और मोमबत्ती के एक छोटे टुकड़े के साथ हाना ने अपना 11वाँ जन्मदिन मनाया।

तोक्यो

जून 2000

'बच्चों की नज़र से नरसंहार' नामक प्रदर्शनी ने फूमिको की उम्मीद से कहीं अधिक दर्शकों, बड़ों और बच्चों दोनों को आकर्षित किया। संग्रहालय में आने वाले कई लोगों के लिए नरसंहार की भयानक कहानी बिलकुल नई थी। फूमिको की उम्मीद के माफिक एकत्रित चीज़ों और जो कहानी वे बयान करते थे उससे नरसंहार की त्रासदी और भी सजीव हो गई।

यद्यपि दर्शकों की रुचि जूते, ज़ायक्लॉन बी गैस और छोटे स्वेटर में भी थी, पर चुम्बक था सूटकेस। बच्चे और उनके माँ-पापा लगातार सूटकेस के आसपास घिर आते और उस पर लिखी इबारत पढ़ते: हाना ब्रैडी, मई 16, 1931, वाइज़नकिंड – अनाथ। वे उन तमाम कविताओं को भी पढ़ते जो स्मॉल विंग्स के सदस्यों ने लिखी थीं। थेरेसिएनस्टाट में हाना द्वारा बनाए गए चित्रों को निहारते। "क्या इस बच्ची के बारे में आप कुछ और भी जानते हैं?" वे पूछते। "उसे क्या हुआ? वह कैसी दिखती थी?" फूमिको ने तय किया कि वह हाना के फोटो की तलाश की कोशिश दुगनी गति से करेगी। कहीं कोई तो होगा जो फोटो ढूँढने में उसकी मदद कर सके। फूमिको ने टेरेज़िन के घेट्टो संग्रहालय को फिर से खत लिखा। जवाब आया, नहीं। हम पहले ही बता चुके हैं। हम हाना ब्रैडी नामक बच्ची के बारे में कुछ भी नहीं जानते।

फूमिको यह मान लेने को तैयार नहीं थी। उसने तय किया कि वह खुद टेरेज़िन जाएगी।

निर्वासन केन्द्र

मई 1942

चौथे दिन सुबह-सुबह ज़ोरदार सीटी बजी और एक नाज़ी सैनिक गोदाम में कूच करता घुसा। उसने सख्त आवाज़ में आदेश दिया, जिसे सुनकर हाना और जॉर्ज अपने कोने में दुबक गए।

"सभी एक घण्टे में रेल लाइन के पास उपस्थित होंगे। हरेक व्यक्ति एक ही सूटकेस ले जा सकेगा। पच्चीस किलो का। एक ग्राम भी ज़्यादा नहीं। सीधी कतारें बनाओ। कोई बातचीत नहीं। जो कहा गया, वो करो।"

सैनिक की आवाज़ कितनी कर्कश और डरावनी थी। हाना और जॉर्ज ने जल्दी-जल्दी सामान समेटा। बड़ों ने उनकी मदद की ताकि बच्चे समय पर तैयार रहें। बेचारे नन्हे बच्चे, वे सोच रहे थे। बिन माँ-बाप के अकेले बच्चे, और इतनी कठोर यात्रा।

सैनिकों की कड़ी नज़रों के पहरे में सभी लोग एक कतार बनाकर निकले और रेल की पटरियों के पास खड़े होते गए। हाना और जॉर्ज सुबह की जगमग धूप से घुप्प अँधेरी रेलगाड़ी में चढ़ गए, अपने सूटकेस उठाए हुए। उनके पीछे और भी कई लोग घुसे, जब तक डिब्बा भर न गया। फिर दरवाज़े धड़ाम से बन्द हुए और रेलगाड़ी चल पड़ी।

टेरेज़िन

जुलाई 2000

थेरेसिएनस्टाट। यह नाम नाज़ियों ने टेरेज़िन नामक चेक शहर को दिया था। फूमिको जानती थी कि हाना के सूटकेस का रहस्य सुलझाने के लिए उसे वहाँ जाना होगा। पर कैसे? चेक गणतंत्र जापान से हज़ारों मील दूर था और हवाई जहाज़ के टिकट के लिए खूब पैसे चाहिए थे, जो फूमिको के पास नहीं थे।

पर इस बार किस्मत ने उसका साथ दिया। फूमिको को इंग्लैंड में हॉलोकॉस्ट पर आयोजित एक सम्मेलन में शिरकत करने का आमंत्रण मिला। वहाँ से चेक गणतंत्र की राजधानी प्राग तक एक छोटी-सी हवाई-यात्रा से पहुँचा जा सकता था। और प्राग से टेरेज़िन सड़क मार्ग से सिर्फ दो घण्टे की दूरी पर था। फूमिको निकल पड़ने को बेताब थी।

11 जुलाई 2000 की सुबह फूमिको टेरेज़िन के मुख्य चौराहे पर बस से उतरी। पहली नज़र में यह एक साधारण सुन्दर-सा शहर लगा। वहाँ की सड़कें चौड़ी थीं, किनारे पर पेड़ों की कतारें और बढ़िया साफ-सुथरे तिमंज़िलें भवन थे, जिनकी खिड़कियों पर फूलों के गमले सजे थे। पर इस सब पर फूमिको का ध्यान नहीं गया। उसके पास अपना लक्ष्य हासिल करने के लिए महज़ एक दिन था। उसी रात उसे प्राग वापस लौटना था। जापान जाने वाला उसका हवाई जहाज़ अगली सुबह प्राग से निकलने वाला था।

फूमिको ने पहले से कोई फोन नहीं किया था। संग्रहालय से उसने मिलने का कोई निश्चित समय नहीं लिया था। पर मुख्य चौराहे के ठीक सामने उसे एक लम्बा, हल्का पीला दो मंज़िला भवन दिखाई दे रहा था। यह टेरेज़िन घेट्टो संग्रहालय था।

फूमिको ने उसका भारी मुख्य दरवाज़ा खोला और भवन के ठण्डे स्वागत कक्ष में पहुँची। वहाँ एक अजीब-सी शान्ति पसरी हुई थी। कहाँ थे सब लोग? उसने आसपास के कुछ दफ्तर-नुमा कमरों में झाँककर देखा। वे खाली थे। लगता था कि पूरी इमारत में कोई है ही नहीं।

हुआ क्या है? फूमिको सोचने लगी। क्या सभी लोग दोपहर का खाना खाने गए हैं? नहीं, अभी तो सुबह के दस ही बजे हैं। फूमिको बाहर चौराहे पर वापस आई और पार्क की बेंच पर बैठे एक मिलनसार व्यक्ति का कन्धा थपथपाया। "क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं?" उसने पूछा, "मैं संग्रहालय में किसी को ढूँढ रही हूँ जो मेरी मदद कर सके।"

"ओह, आज आपको वहाँ कोई नहीं मिलेगा। आज छुट्टी है और वहाँ काम करने वाले सभी लोग त्यौहार मना रहे होंगे," उस अजनबी ने जवाब दिया। "मुझे अफसोस है कि शायद आज आपका काम नहीं हो पाएगा।"
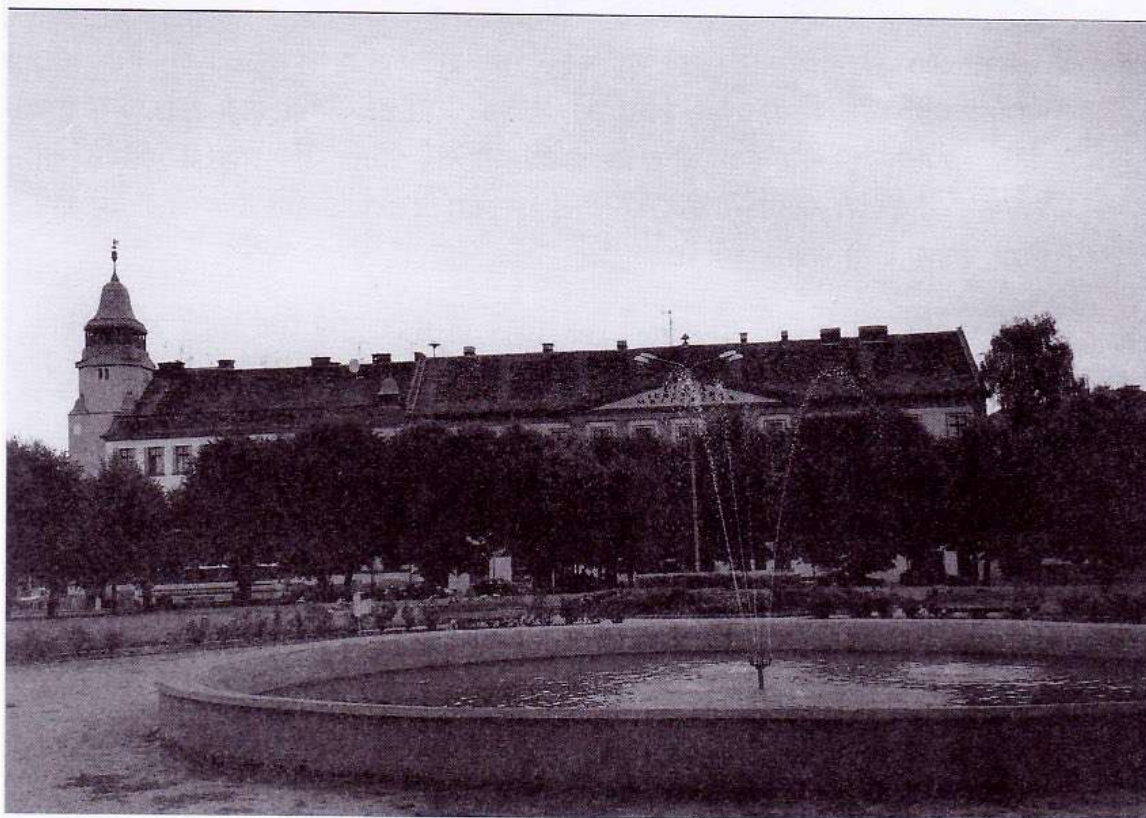
फूमिको ने आधुनिक टेरेज़िन का दौरा किया

थेरेसिएनस्टाट

मई 1942

रेलगाड़ी का सफर शान्त रहा, कुछ खास घटा नहीं। लोग अपने आप में सिमटे-से थे, भविष्य की चिन्ताओं और भय में डूबे। कुछ घण्टों बाद रेलगाड़ी अचानक रुक गई। दरवाज़े खोले गए और दरवाज़े के पास खड़े भयभीत यात्रियों ने जगह का नाम लिखा देखा – "बोहुसोविक स्टेशन।" अपना सूटकेस उतारते हुए हाना की आँखें धूप में चुँधिया गईं। स्टेशन पर उन्हें आदेश दिया गया कि वे वहाँ से थेरेसिएनस्टाट के किले तक पैदल जाएँ।

दूरी कुछ ही किलोमीटर की थी, पर उनके सूटकेस भारी-भरकम थे। क्या कुछ सामान यहीं छोड़ दिया जाए, हाना और जॉर्ज ने सोचा, ताकि बोझ कुछ कम हो? नहीं, सूटकेस की एक-एक चीज़ बेहद कीमती थी, उनके अब तक के जीवन की एकमात्र यादगार। जॉर्ज ने एक सूटकेस उठाया। दूसरा उन्होंने एक ठेले पर रख दिया, जिसे कैदी धकेल रहे थे।

हाना और जॉर्ज ऊँची दीवारों से घिरे किले के प्रवेश द्वार तक पहुँचे और कतार में जा लगे। सभी लोग पीला सितारा लगाए हुए थे, ठीक उनकी ही तरह।

कतार के सामने एक सैनिक लोगों से उनके नाम, उम्र और जन्म स्थान पूछ रहा था। लड़कों और पुरुषों को एक दिशा में भेजा जा रहा था और लड़कियों और महिलाओं को दूसरी दिशा में। "वे कहाँ जा रहे हैं?" हाना ने जॉर्ज से पूछा। उसका सबसे बड़ा डर अपने भाई से अलग किए जाने का था। "क्या मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकती?" उसने विनती की।

"चुप करो हाना!" जॉर्ज ने बहन से कहा। "कोई बखेड़ा न करना।"

जब वे कतार में आगे बढ़ आए तो सैनिक ने उन्हें घूरा। "माँ-बाप कहाँ हैं?" उसने जानना चाहा।
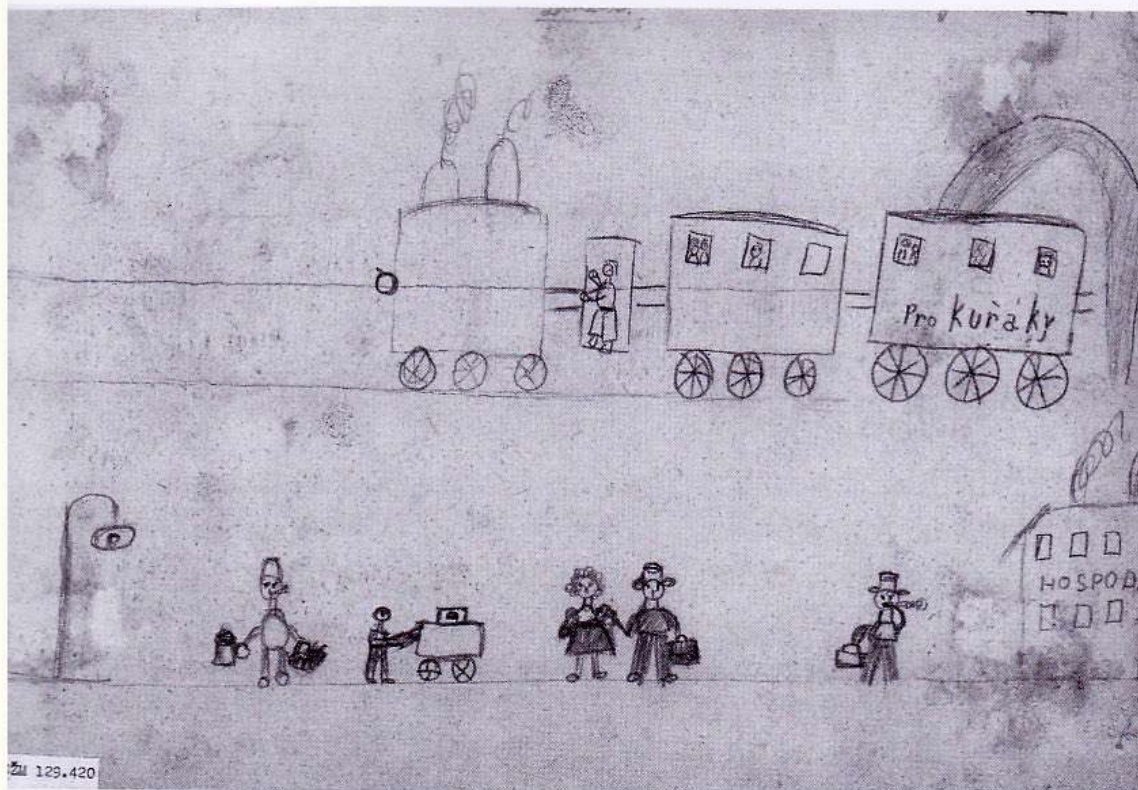
रेलगाड़ी से उतरते हुए लोगों का यह चित्र हाना ने थेरेसिएनस्टाट में रहते हुए बनाया था

"वे तो अंह, किसी दूसरे अंह, शिविर में हैं," जॉर्ज ने हकलाते हुए कहा। "हमें उम्मीद है कि यहाँ हम फिर से उनसे मिल सकेंगे।"

सैनिक की बातचीत में कोई रुचि नहीं थी। उसने उनके नाम कार्डों पर लिखे और पैसे व गहनों के लिए उनके सूटकेसों की तलाशी ली। फिर उसने सूटकेसों को ज़ोर से बन्द करते हुए जॉर्ज को हुक्म दिया, "बाईं ओर बढ़ो।" और हाना से कहा, "दाईं ओर बढ़ो!"

"क्या मैं अपने भाई के साथ रह सकती हूँ?" हाना ने विनती करते हुए कहा।

"आगे बढ़ो! फौरन!" सैनिक ने आदेश दिया। हाना जिस चीज़ से सबसे ज़्यादा डर रही थी, वही होने वाला था। जॉर्ज ने जल्दी से उसे गले लगाया। "फिक्र मत करो," उसने कहा। "मैं जल्द से जल्द तुम्हें ढूँढ लूँगा।" अपने आँसुओं को रोकते हुए हाना ने सूटकेस उठाया और दूसरी लड़कियों के पीछे किंडरहाइम (बाल गृह) L410 की ओर चल दी। यह लड़कियों की एक बड़ी बैरक थी, जो अगले दो साल तक हाना का घर बनने वाली थी।

टेरेज़िन

जुलाई 2000

फूमिको को विश्वास ही नहीं हुआ। वह बेहद परेशान हो गई – अपने आपसे और अपनी बदकिस्मती से। मैं इतनी दूर आई हूँ और जो भी मेरी मदद कर सकते हैं वो छुट्टी पर हैं। टेरेज़िन संग्रहालय आने के लिए मैंने यह बुरा समय भला कैसे चुना? मैंने इतनी बड़ी बेवकूफी कैसे की? उसने सोचा। अब मैं क्या करूँ?

तेज़ धूप में खड़े-खड़े फूमिको के गाल पर कुण्ठा का आँसू लुढ़क आया। उसने तय किया कि वह फिर संग्रहालय जाएगी और शान्ति से सोचने की कोशिश करेगी। शायद उसे कोई नई तरकीब सूझ जाए।

वह स्वागत कक्ष में एक बेंच पर बैठी ही थी कि उसे कुछ सरसराहट सुनाई दी। ऐसा लगा कि आवाज़ हॉल के आखिरी छोर पर बने किसी दफ्तर से आ रही है। वह दबे पाँव उस आवाज़ की ओर बढ़ी। वहाँ दाहिनी ओर के आखिरी कमरे में उसे एक महिला दिखी, नाक के निचले कोने पर चश्मा चढ़ाए वह महिला कागज़ों के एक बड़े पुलिन्दे को छाँट रही थी।

फूमिको को देख वह महिला मानो चौंककर कुर्सी से उछल पड़ी। "कौन हैं आप?" उसने पूछा। "आप यहाँ क्या कर रही हैं? संग्रहालय आज बन्द है।"

"मेरा नाम फूमिको इशिओका है," उसने जवाब दिया। "मैं बड़ी दूर जापान से एक लड़की के बारे में जानकारी लेने आई थी, जो यहाँ थेरेसिएनस्टाट में थी। हमारे तोक्यो के संग्रहालय में उसका एक सूटकेस है।"

"आप किसी और दिन आएँ," महिला ने शिष्टता से कहा, "हम में से कोई आपकी मदद करने की कोशिश करेगा।"

"पर मेरे पास और दिन हैं ही नहीं," फूमिको बोली। "मेरा हवाई जहाज़ कल सुबह जापान के लिए निकल रहा है। कृपया," उसने निवेदन करते हुए कहा। "हाना ब्रेडी को ढूँढने में मेरी मदद करें।"

महिला ने अपना चश्मा उतारा। सामने खड़ी जापानी युवती को घूरा, समझ गई कि वह कितनी परेशान लेकिन ज़िद्दी है। चेक महिला ने एक गहरी साँस छोड़ी। "ठीक है," उन्होंने कहा। "मैं कोई वादा नहीं कर सकती, पर आपकी मदद करने की कोशिश मैं ज़रूर करूँगी। मेरा नाम लूडमिला है।"

थेरेसिएनस्टाट

1942-43

किंडरहाइम (बाल गृह) L410 एक बड़ा साधारण-सा भवन था जिसमें दस बड़े कमरे थे। हर कमरे में करीब बीस लड़कियाँ, भूसा भरे टाट के गद्दों पर तिमंज़िले बिस्तरों पर सोती थीं। युद्ध के पहले इस शहर में करीब 5,000 बाशिन्दे थे। नाज़ियों ने उस जगह में उसकी आबादी से दस गुना ज़्यादा बन्दी ठूँस दिए थे।

न वहाँ कभी पर्याप्त जगह होती थी, न पर्याप्त खाना, न पल भर के लिए भी अकेले रह पाने की गुंजाइश। ज़रूरत से ज़्यादा लोग, ज़रूरत से ज़्यादा खटमल व चूहे, और ज़रूरत से ज़्यादा नाज़ी थे जो कठोर अनुशासन के साथ शिविर में पहरेदारी करते थे।

छोटी होने के कारण शुरुआत में हाना को इमारत से निकलने की इजाज़त नहीं थी। इसका मतलब था कि वह कभी जॉर्ज को देख नहीं सकती थी। उसे किंडरहाइम L417 में रखा गया था, जो केवल लड़कों के लिए था और कुछ मकानों की दूरी पर था। हाना को जॉर्ज की बहुत याद आती और वह लगातार उन बड़ी लड़कियों से उसका हालचाल पूछती रहती, जिन्हें बाहर जाने की छूट थी। बड़ी लड़कियों ने हाना को अपनी हिफाज़त में ले लिया था। उन्हें उसके लिए बुरा लगता था क्योंकि वह अपने माँ-पापा से दूर दुनिया में अकेली थी और अपने भाई से भी बिछड़ी हुई थी।

हाना की दोस्ती पास के बिस्तर पर सोने वाली एक बड़ी लड़की से हो गई। एला कद में छोटी, काली और बेहद जीवन्त लड़की थी। वह हमेशा हँसती रहती थी। वह एक छोटी लड़की के साथ समय बिताकर खुश थी, जो उसकी प्रशंसा करती थी, जिसकी वह मुश्किल समय में देखभाल कर सकती थी।

भोजन के टिकट बाँटने वाले आदमी को हाना अच्छी लगने लगी थी। वह उसके स्वास्थ्य के बारे में चिन्तित रहता। वह जानता था कि हाना हमेशा भूखी रहती थी। उसने पनियल शोरबे या काली डबल रोटी के एक और टुकड़े के लिए हाना को चोरी-छिपे ज़्यादा टिकटें देने की पेशकश की। कुछ और खाना मिलने के बारे में सोचकर ही हाना का पेट गुड़गुड़ाने लगता और उसके मुँह में पानी भर आता। पर

जब कभी वह ज़्यादा टिकटें देने की कोशिश करता, हाना शिष्टता से मना कर देती। एला और दूसरी बड़ी लड़कियों ने उसे आगाह कर दिया था कि अगर वह कभी नियम तोड़ते पकड़ी गई तो चौकीदार उसे कड़ी सज़ा देंगे।

परिवारों से बिछड़ी, छोटी-सी जगह में ठूँसी हुईं, आधे पेट खाकर समय काट रही ये लड़कियाँ बहुत बुरे हालातों में भी स्थितियाँ सुधारने की कोशिश में जुटी थीं। 15 साल से बड़ी लड़कियाँ उन बागानों में काम करती थीं जहाँ नाज़ी सैनिकों के लिए फल, सब्ज़ियाँ और फूल उगाए जाते थे। मिस्टर श्वार्टझबार्ट, जो बाग को सम्हालते थे, कभी-कभार हाना को भी काम करने वाले समूह में शामिल होने देते ताकि वह ताज़ी हवा और धूप का मज़ा ले सके। हाना को बड़ी लड़कियों के साथ बाग में काम करना बेहद पसन्द आता था। इसका एक और फायदा भी था। कोई हरी फली या स्ट्रॉबेरी-सा छोटा फल, हमेशा ही भूखी लड़कियों के मुँह में पहुँच जाता।

पर हाना को तो ज़्यादातर अपनी उम्र की या अपने से छोटी लड़कियों के साथ ही रहना पड़ता और निरीक्षक का कहा मानना पड़ता। हर दिन वे झाड़-पोंछ करते, बिस्तरों के नीचे झाड़ू लगाते। बरतन और चेहरे भी एक ही पम्प के नीचे धोए जाते थे। और हर दिन किंडरहाइम L410 की अटारी में गुप्त कक्षाएँ भी चलाई जातीं।

संगीत की कक्षा में लड़कियाँ नए गीत सीखतीं। वे धीमे स्वर में गातीं, ताकि पहरे पर तैनात सैनिक सुन न लें। हर कक्षा के अन्त में किसी एक बच्ची से कहा जाता कि वह घर में सीखा अपना पसन्दीदा गीत गाए। जब हाना की बारी आती वह हमेशा 'स्टोनोज़्का' नामक गीत गाती जो कनखजूरे के बारे में था:

जीवन नहीं उसका आसान
सोचो कितनी तकलीफें वह झेलती होगी
तब तक चलती वह जाती,
जब तक उसके सौ पैर दर्द से टूटने लगते
गिले-शिकवे का कारण है उसके पास।
सो जब दुख में रोने का मेरा जी करता है
मैं सौ पाँवों वाले कनखजूरे को याद करती हूँ
उसका-सा जीवन बिताने की कल्पना करती हूँ,
और तब अपना जीवन कितना सुहाना लगता है।

सिलाई की कक्षाएँ भी हुआ करती थीं। हाना ने इसके पहले एक टाँका तक नहीं लगाया था, सो सूई पकड़ना भी उसे मुश्किल लगता था। जब कभी हाना कोई

बेवकूफी भरी गलती करती और बेतहाशा हँस पड़ती तो शिक्षिका को उसे खुद पर काबू रखने को कहना पड़ता था। इसके बावजूद हाना ने नीले रंग का एक ब्लाउज़ बनाया, उसे इस बात पर बड़ा गर्व था।

पर हाना की पसन्दीदा कक्षा थी चित्रकला की। रँगने और चित्र बनाने की सामग्री जुटाना आसान नहीं था। कुछ लोग अपने सूटकेसों में यह सब छुपाकर घेट्टो में ले आए थे। कागज़, कई बार खतरा मोल लेकर नाज़ियों के भण्डारों से चुराया गया था। जब कागज़ खत्म हो जाता तो वे सादा लपेटने वाला कागज़ भी इस्तेमाल कर लेते। शुरुआती दिनों में हमेशा किसी न किसी तरह क्रेयॉन और रंगीन पेंसिलों का जुगाड़ हो जाता था।

चित्रकला की शिक्षिका फ्रीडल डिकर-ब्रैंडेइस एक प्रसिद्ध चित्रकार थीं और अब थेरेसिएनस्टाट में कैद थीं। फ्रीडल अपनी विद्यार्थियों को दृष्टिकोण (perspective) और बुनावट जैसी गम्भीर चीज़ें भी सिखातीं। और कभी-कभार लड़कियाँ भी गम्भीर विषयों
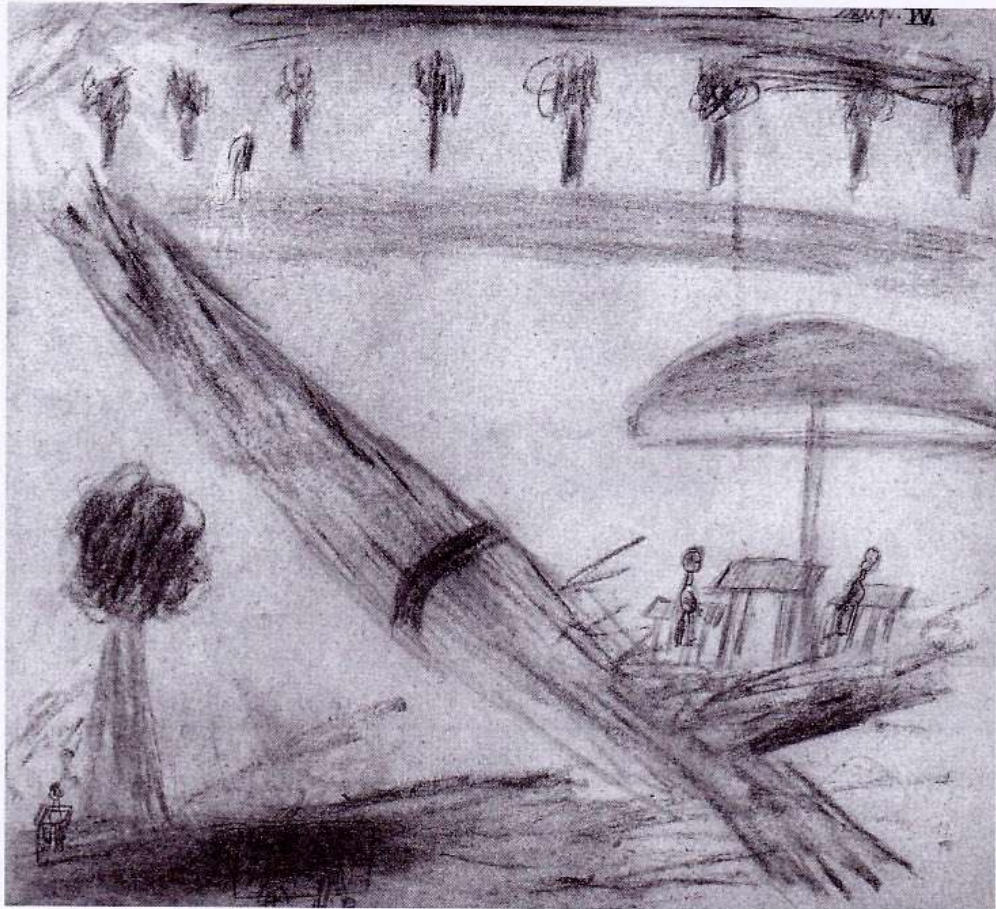
नदी किनारे छतरी के नीचे बैठकर पिकनिक मनाते लोगों की हाना द्वारा बनाई गई तस्वीर

का चित्रण करतीं: घेट्टो की दीवारें, खाने के इन्तज़ार में कतार लगाए लोग, नाज़ी सैनिकों द्वारा कैदियों की पिटाई।

पर फ्रीडल चाहती थीं कि उसकी कक्षा बच्चों को उनकी क्रूर स्थितियों को भूलने में मदद करे, कम से कम कुछ समय के लिए ही सही। "खुली जगह की कल्पना करो," वे हाना और दूसरी लड़कियों को कहतीं। "आज़ादी की कल्पना करो। अपनी कल्पना को बेलगाम दौड़ने दो। तुम्हारे दिल में जो हो, मुझे वो बताओ। उसे कागज़ पर उतारो।"

बच्चों को वे कभी-कभार छत पर ले जातीं, ताकि वे आसमान के करीब हो सकें। यह उनके लिए तोहफे जैसा होता। वहाँ से वे शिविर की चहारदीवारी के परे, दूर खड़े पहाड़ों को देख सकते थे। लड़कियाँ पक्षियों और तितलियों, तालाबों और झूलों के सपने देख पातीं। और फिर क्रेयॉन और पेंसिलों के सहारे उन्हें जीवित कर देतीं।

जब कक्षाएँ हो चुकतीं और सभी काम हो जाते तो वे एक खेल खेलतीं, जिसका नाम था "स्मेलीना"। यह खेल घेट्टो में ही ईजाद किया गया था। खेल मोनॉपली पर आधारित था। इसे ओसवॉल्ड पॉक नामक इंजीनियर ने खास तौर से बच्चों के लिए बनाया था। वह भी टेरेज़िन में निर्वासित किया गया था। इसमें खिलाड़ी चाल चलते हुए एंटवेसुंग जैसी जगहों, जहाँ कपड़ों से जूँ आदि निकाले जाते थे, और पहरेदारों के बैरकों पर पहुँचते। वहाँ होटल बनवाने की जगह वे 'कुम्बल' बनाते, जो बैरकों की अटारी पर छुपने की जगह थी। रुपयों की जगह वे घेट्टो की कागज़ की मुद्रा काम में लेते, जो घेट्टो क्रोनिन कहलाता था।

पर दिल बहलाने के हर उपाय के बावजूद हाना को हमेशा ही भूख और अकेलेपन का एहसास होता। उसे जॉर्ज की कमी सताती रहती। फिर एक दिन घोषणा हुई कि घेट्टो के नियम बदले गए हैं। लड़कियाँ हफ्ते में एक बार दो घण्टे के लिए बाहर जा सकती हैं।

हाना फौरन चौराहा पार करके लड़को के भवन की दिशा में दौड़ पड़ी। "जॉर्ज, जॉर्ज ब्रेडी!" वह पुकारती गई। "मेरा भाई कहाँ है? क्या आपने मेरे भाई को देखा है?" वह हर कमरे में हरेक लड़के से पूछती गई। हाना अपने भाई को ढूँढने को इतना बेताब थी कि उसने एक गुसलखाने का दरवाज़ा तक खोल डाला। और जॉर्ज वहीं था, वह बतौर प्लम्बर अपना नया काम कर रहा था। कैसा खुशियों भरा मिलन था यह। जॉर्ज ने अपने औज़ार पटके और हाना दौड़कर उसके गले लग गई। वे हँसे। वे रोए। सवालों की तो जैसे झड़ी लग गई। "क्या तुम ठीक हो? क्या माँ-पापा की कोई खबर मिली? क्या खाने को काफी मिल रहा है?" इसके बाद से वे साथ समय बिताने के हरेक मौके का पूरा फायदा उठाने लगे।

जॉर्ज बड़े भाई होने की भूमिका बड़ी गम्भीरता से लेता था। उसे लगता कि हाना की रक्षा करना, उसे हर परेशानी से बचाना उसका ही फर्ज़ था। वह उसे तब तक भरसक खुश और स्वस्थ रखना चाहता था जब तक वे फिर से माँ-पापा के साथ नहीं हो जाते।

और हाना भी जॉर्ज के प्रति उतनी ही तत्पर थी। टेरेज़िन में, जहाँ भरपेट खाना कभी नहीं मिलता था, आवासियों को हफ्ते में एक दिन एक छोटा "बुख्ता" यानी सादा डोनट मिला करता था। हाना अपना बुख्ता कभी न खाती। वह जॉर्ज को अपना बुख्ता दे देती ताकि वह ताकतवर और मीठा बना रहे।

हाना को लगता कि थेरेसिएनस्टाट में हर दिन और-और लोग आते ही जा रहे हैं। पहले पूरे चेकोस्लोवाकिया से, पर बाद में यूरोप के दूसरे देशों से आदमी, औरतें और बच्चे आते। जब भी लोगों का नया समूह रेलगाड़ी से उतरता, हाना जाने-पहचाने चेहरों को तलाशती। और कभी, जब उसमें हिम्मत होती, तो वह अपरिचित लोगों के पास जाकर पूछ बैठती, "क्या आप मेरे माँ-पापा को जानते हैं? क्या आप रेवन्सब्रुक नामक जगह गए हैं? वहाँ मेरी माँ है! क्या कारेल और मारकेटा ब्रेडी की कोई खबर आपके पास है?" जवाब हमेशा एक ही होता, पर कई बार सहृदयता से भरा और कभी दयाभाव को छुपाने की झीनी कोशिश के साथ दिया जाता – "नहीं प्यारी, हम तुम्हारे माँ-पापा को नहीं जानते। पर अगर कुछ भी पता चलेगा – कुछ भी – तो हम तुम्हें तलाशकर ज़रूर बताएँगे।"

फिर एक दिन एक परिचित चेहरा सच में दिखाई पड़ा – उसके माँ-पापा की एक सहेली, जिसका अपना कोई बच्चा नहीं था। पहले-पहल हाना उन्हें देखकर बड़ी खुश हुई। घर की याद दिलाने वाला कुछ भी हाना को यह एहसास देता कि वह एक कदम और अपने माँ-पापा के करीब आ चुकी है। उसे बड़ी तसल्ली मिलती। पर फिर अचानक हाना को लगने लगा कि वह जहाँ भी जाती है, वह औरत उसका इन्तज़ार करती मिलती है। हर मोड़ पर हाना उस औरत से टकरा जाती। वह हाना के गाल चिमटाती, उसे चूमती। एक दिन तो उसने हद ही कर दी।

"यहाँ आ जा, मेरी नन्ही बच्ची," उसने हाथ फैलाकर हाना से कहा। "साथ बिताया अपना अच्छा समय याद है ना। शरमाना मत। अकेला महसूस नहीं करना। तुम हर दिन मुझसे मिलने आ सकती हो। तुम मुझे 'माँ' कहकर बुला सकती हो।"

"मेरी माँ है," हाना ने गुस्से से कहा। "आप जाइए! मुझे अकेला छोड़ दीजिए।" हाना ने उस औरत से फिर कभी मिलने से इन्कार कर दिया। उसे अपनी माँ की याद सताती थी। उसकी जगह कोई दूसरा कहाँ ले सकता था।

टेरेज़िन

जुलाई 2000

टेरेज़िन घेट्टो संग्रहालय में, अपनी मेज़ के पीछे बैठकर लुडमिला सामने की सीट के किनारे पर टिकी उस नौजवान जापानी महिला को टकटकी लगाए देख रही थी। फूमिको का दृढ़ संकल्प उसके चेहरे पर साफ ज़ाहिर था। उसे फूमिको पसन्द आई और वह उस लड़की, हाना ब्रैडी के बारे में जानकारी तलाशने में उसकी मदद करना चाहती थी।

उसने ताक पर रखा एक बड़ा-सा रजिस्टर निकाला। उसमें थेरेसिएनस्टाट में कैद रहे और वहाँ से पूर्व की ओर भेजे गए लगभग 90,000 औरतों, आदमियों और बच्चों के नाम दर्ज थे। वे अक्षर 'बी' की सूची निकालकर देखने लगे: ब्राखोवा, हरमीना। ब्राखोवा, ज़्यूसाना। ब्राडा, टोमास। ब्राडाकोवा, मारटा। ब्राडलेओवा, ज़्डेन्का।

"ओह, यह रही," लुडमिला चीख पड़ी। और सच में वह वहाँ थी: हाना ब्रैडी, मई 16, 1931। "इसके बारे में और जानकारी कहाँ मिलेगी?" फूमिको ने पूछा।

"काश, मैं जानती," लुडमिला ने जवाब दिया।

"पर देखिए," फूमिको ने उस रजिस्टर की एक दूसरी पंक्ति की ओर इशारा करते हुए कहा। हाना के नाम के ऊपर एक और ब्रैडी का नाम था। "क्या यह उसी परिवार का कोई इन्सान है?" फूमिको ने सोचते हुए पूछा। लुडमिला ने जन्म तारीखों को जाँचा। तीन साल का अन्तर था। "हाँ," उसने कहा, "सम्भव है कि यह उसका बड़ा भाई हो। नाज़ी अधिकारी परिवार के नाम साथ-साथ दर्ज किया करते थे।"

फूमिको ने एक और बात पर गौर किया। हाना के नाम के सामने एक सही का निशान था। दरअसल उस पन्ने पर सभी नामों के आगे सही का निशान लगा था – सिवाय एक के। उस दूसरे ब्रैडी, जॉर्ज ब्रैडी के नाम के सामने कुछ नहीं था। इसका क्या मतलब था?

30

Nr.	Name		Beruf	Geb.	Adresse	
581	Wolfenstein Helene	37581	Haushalt AZ-315	15. 6. 1890	Gr. Meseritsch Oberstadt 350	100716
582	Wolfenstein Walter	37582	Arbeiter AZ-316	19.10. 1913	Gr. Meseritsch Oberstadt 350	100719
583	Wolfenstein Sidonie	37583	Schneiderin AZ-317	10. 4. 1911	Gr. Meseritsch Oberstadt 350	100718
584	Schück Ing. Friedrich	37584	Masch. Ing. AZ-318	3. 6. 1891	Unter Dobrau 81 Dolní Bobrová	100646
585	Drechsler Simon	37585	Kaufmann AZ-319	3. 8. 1883	Gr. Meseritsch Dalimilg. 35	100483
586	Schnabel Rudolfine	37586	Haushalt AZ-320	30. 3. 1877	Unter Bobrau 81	100613
587	Schück MUDr. Ottokar	37587	Arzt AZ-321	4.11. 1894	Unter Dobrau 81	100619
588	Schück Edith	37588	Haushalt AZ-322	17. 5. 1907	Unter Dobrau 81	10064[illegible]
589	Schück Dagmar	37589	Schülerin AZ-323	30. 3. 1930	Unter Dobrau 81	100615
590	Schück Zdenko	37590	Schüler AZ-324	31. 7. 1938	Unter Dobrau 81	100650
591	Fein Anna	37591	Private AZ-325	9. 6. 1890	Neustadtl 1. M. 135 Nové Město n/Moravě	100491
592	Lauer Irma	37592	Hausgehilfin AZ-326	21. 8. 1932	Teltsch, Mladekg. 181 dzt. Trebitsch Iglauer Tor 1 Telč	101[illegible]
593	Thierfeld Emma	37593	Haushalt AZ-327	13. 3. 1887	Stadt Saar 63	100636
594	Schwartz Irene H.	37594	Fotografin AZ-328	3.12. 1915	Stadt Saar 63 Město Žďár	10065[illegible]
595	Thierfeld Paul	37595	Arbeiter AZ-329	16. 3. 1936	Stadt Saar 63	100633
596	Brady Georg	37596	Schüler EK-825	9. 2. 1928	Neustadtl 1...13	100435
597	Brady Hanna	37597	Schülerin ET-348	16. 5. 1931	Neustadtl 1...13	100436
598	Jillitsch Anna	37598	Haushalt AZ-338	27. 1. 1901	Bochesetz 28 Březejc	100714
599	Blum Irene	37599	Haushalt Eqe-416	15.10. 1891	Gr. Meseritsch Dalimilg. 23	100433
600	Buchsbaum Elsa	37600	Haushalt Es-372	13.12. 1892	Gr. Meseritsch Dalimilg. 23	100418

Av

इस सूची से फूमिको को पता चला कि हाना का कोई भाई भी था

थेरेसिएनस्टाट

1943-44

जैसे-जैसे दिन और महीने बीतते गए, थेरेसिएनस्टाट में लोगों की तादाद बढ़ती गई। ट्रेनों में भर-भरकर लोग वहाँ लगातार आते गए। इसका मतलब था सबके लिए पहले से भी कम खाना, और इस कारण लोग कमज़ोर और बीमार होने लगे। सबसे ज़्यादा खतरा था सबसे बुज़ुर्ग और सबसे छोटे बच्चों को।

हाना को घेट्टो में आए करीब साल भर हुआ होगा कि एक दिन उसे जॉर्ज का ज़रूरी सन्देशा मिला: शाम छह बजे लड़कों के भवन में मिलो। तुम्हारे लिए एक बढ़िया खबर है।

जॉर्ज एक अच्छी खबर देने को बेताब था। "दादी यहाँ हैं! वह कल रात ही पहुँची हैं!"

बच्चे दादी को फिर से देखने की बात से बेहद खुश थे। पर दोनों कुछ चिन्तित भी थे। जॉर्ज और हाना की दादी एक ज़हीन महिला थीं, जो राजधानी प्राग में एक नफीस और आरामदेह ज़िन्दगी जी रही थीं। इन्हीं दादी ने बच्चों को उनके स्कूटर दिए थे। जब भी वे बड़े शहर में उनसे मिलने जाते वे उन्हें प्यार से केले और सन्तरे खिलातीं। पर हाल के कुछ सालों में वे काफी बीमार रही थीं। इस भयानक जगह में वे कैसे गुज़ारा कर पाएँगी? बड़ी बुरी स्थिति में, यह बाद में पता चला।

बच्चों ने उन्हें एक ठसाठस भरी अटारी में सिर्फ पुआल पर पड़े पाया। वे कई बीमार बुज़ुर्गों में से एक थीं। मध्य जुलाई का समय था और अटारी में उबलती गर्मी थी। बच्चों ने जो देखा उससे वे सकते में आ गए। उनकी कोमल और नफीस दादी का बुरा हाल था। हमेशा बहुत सफाई से काढ़े हुए उनके सफेद बाल उलझ गए थे। उनके कपड़े फटे हुए और गन्दे थे। "मैं आपके लिए अपना बनाया हुआ एक चित्र लाई हूँ, दादी," हाना ने चहकते हुए कहा, यह सोचकर कि शायद इससे उनके चेहरे पर मुस्कान आ जाए। पर दादी तो बमुश्किल अपना सिर मोड़ पाई थीं। हाना ने हाथ के कागज़ को मोड़कर अपने चित्र का पंखा बना लिया। "आराम करो," उसने पंखा

झलते हुए दादी से कहा। हाना को इस बात पर फख्र हुआ कि वह अपनी दादी को बेहतर महसूस करवा पाने की ज़िम्मेदारी उठा रही है।

हाना को जल्दी ही पता चल गया कि थेरेसिएनस्टाट में बड़े-बूढ़ों को सबसे कम और सबसे खराब राशन दिया जाता था। दादी को मिलने वाला खाना न केवल बेहद कम था बल्कि अक्सर उसमें कीड़े कुलबुलाते होते थे। दवा कोई थी ही नहीं। जैसे ही मौका मिलता बच्चे उनको मिलने जाते और अपने हाथों से बनाई चीज़ों को लाकर और नए सीखे गीत गाकर उन्हें खुश रखने की कोशिश करते। "ये बुरे दिन जल्दी ही गुज़र जाएँगे," जॉर्ज उन्हें कहता। "माँ-पापा को हमसे यह उम्मीद है कि हम सब मज़बूत बने रहेंगे," हाना कहती।

पर तीन महीने बाद ही दादी चल बसीं। हाना और जॉर्ज के अलावा बाकी लोगों ने इस घटना को खास तवज्जो नहीं दी। मौत तो उनके चारों ओर थी। सच तो यह था कि बहुत सारे लोग इतनी तेज़ी से मर रहे थे कि कब्रिस्तान भर चुका था। एक-दूसरे को सहारा देते हुए हाना और जॉर्ज ने दादी के साथ बिताए खुशगवार दिनों को याद करने की कोशिश की और साथ-साथ रो लिए।

जैसे-जैसे टेरेज़िन में नए लोग आते गए, हज़ारों लोग वहाँ से दूसरी जगहों पर भेजे जाते रहे। उन्हें बन्द गाड़ियों में ठूँसकर पूर्व की ओर अनजाने भाग्य के हवाले भेज दिया जाता। थेरेसिएनस्टाट की चहारदीवारी में इस सफर को लेकर अफवाहें फैलने लगीं। कुछ लोग खुद को और दूसरों को यह दिलासा तक देने लगे कि ट्रेनों में भेजे जाने वालों की ज़िन्दगी बेहतर होने वाली है। पर वक्त बीतने के साथ मौत के शिविरों, क्रूर यातनाओं और कत्ले-आम के किस्से बहुतायत में सुनाए जाने लगे। जब लोग ऐसी बातें करते तो हाना अपने कान ढक लेती।

कुछ-कुछ हफ्तों के अन्तराल में हरेक मकान में वो डरावनी सूचियाँ टाँग दी जातीं। जिन लोगों के नाम उनमें होते उन्हें दो दिनों के अन्दर रेलवे स्टेशन के पास बने सभागार में हाज़िर होना पड़ता।

सूचियाँ। हर जगह सूचियाँ थीं। नाज़ी व्यवस्थित रूप से लेखा-जोखा रखने वाले लोग थे और चाहते थे कि उनके सभी कैदी यह बात ठीक से समझ लें। लगातार लोगों की गिनती और सूचियों में उनके नाम लिखकर वे बन्दियों को जता देना चाहते थे कि हुकुमत किसके हाथों में है। सब जानते थे कि गिनती में शुमार होने, उन पर गौर किए जाने का मतलब एक और सफर और परिवार व दोस्तों से फिर से जुदा होना हो सकता है।

सुधार के बाद थेरेसिएनस्टाट का लड़कियों का बैरक, जहाँ हाना रही थी

एक सुबह जब हाना अपने ज़िम्मे का काम कर रही थी तो शिविर के सभी लोगों को काम बन्द कर देने और शहर के बाहर वाले बड़े मैदान में इकट्ठा होने का हुक्म मिला। बूढ़ों से बच्चों तक सभी को। मशीनगनों से लैस नाज़ी पहरेदार उन्हें परेड करवाते ले गए और उन्हें खड़े रहने का हुक्म मिला। न खाना, न पानी और साथ में यह एहसास कि अब कुछ बहुत ही भयानक घटने वाला है। हाना और दूसरी लड़कियों की आपस में फुसफुसाने तक की हिम्मत नहीं हुई।

हाना इस बात के बारे में सोचना भी सहन नहीं कर पाती थी कि उसे जॉर्ज से जुदा होना पड़ सकता है। या किंडरहाइम L410 की लड़कियों से बिछड़ने की बात, जो बहनों-सी लगने लगी थीं। क्या यह काफी नहीं कि उसके माँ-बाप उससे छिन गए हैं? एला उसके पास खड़ी, मुस्कानों से और आँख मारकर उसका दिल बहलाने की कोशिश कर रही थी। पर चार घण्टों तक खड़े रहने के बाद हाना अपनी हताशा पर काबू न रख सकी। वह रोने लगी।

एला ने कोट में छिपाया डबलरोटी का छोटा-सा टुकड़ा चुपके से उसे थमाया। "यह खा लो हाना," उसने दबी आवाज़ में मिन्नत की। "तुम्हें बेहतर लगेगा।" पर हाना के आँसू बहते रहे। वह बड़ी लड़की फिर हाना की ओर मुड़ी। "ध्यान से सुनो," वह फुसफुसाई। "तुम दुखी और डरी हुई हो। ठीक इसी हालत में तो नाज़ी हमें देखना

चाहते हैं, हम सबको। क्या तुम उन्हें इसका सन्तोष पाने दोगी, हाना! जो वे चाहते हैं, हमें वह उन्हें देना नहीं है। हम इससे कहीं ज़्यादा मज़बूत और बेहतर हैं। आँसू पोंछ लो हाना और साहसी बनो।" कुछ जादू-सा हुआ कि हाना यह कर पाई।

नाज़ी कमाण्डर चिल्ला-चिल्लाकर लोगों के नाम लेने लगा। सभी को जवाब देना था ताकि एक-एक का हिसाब रखा जा सके। आखिरकार, आठ घण्टों तक चुभन वाली ठण्डी हवा में खड़े रहने के बाद सबको बैरकों में लौटने का हुक्म मिला।

1944 का सितम्बर का महीना था। जब नाज़ियों को लगने लगा कि वे युद्ध हारने लगे हैं, तो उन्होंने घोषणा की कि और ज़्यादा लोग थेरेसिएनस्टाट से भेजे जाएँगे। यातायात में तेज़ी लाई गई। अब हर रोज़ नामों की एक नई सूची टाँगी जाने लगी।

हर सुबह धड़कते दिल और तेज़ कदमों के साथ हाना भवन के मुख्य दरवाज़े तक जाती, जहाँ सूची लगाई जाती थी। फिर एक रोज़ उसे वह नाम सूची में नज़र आया जिसका खौफ उसके मन में बसा था – जॉर्ज ब्रैडी। हाना के घुटने जवाब दे गए। वह वहीं फर्श पर बैठकर रोने लगी। जॉर्ज, उसका प्यारा भाई, उसका रखवाला, पूर्व को भेजा जाने वाला था। वह दुबला-पतला लड़का, जो अब एक नौजवान था, उससे कहा गया कि वह 2,000 अन्य तन्दुरुस्त आदमियों के साथ ट्रेन में सवार होने के लिए हाज़िर हो।

अपनी आखिरी मुलाकात के समय, जो लड़कों के भवन और किंडरहाइम L410 के बीच की कच्ची सड़क पर हुई थी, जॉर्ज ने हाना को ध्यान से उसकी बात सुनने को कहा। "मैं कल जा रहा हूँ," वह बोला। "अब तुम्हें पहले से भी ज़्यादा सावधानी से जितना खा सको उतना खाना खाना है। ताज़ी हवा में साँस लेने का कोई मौका मत चूकना। अपने स्वास्थ्य का खयाल रखना। मज़बूत बनी रहना। ये मेरा आखिरी राशन है। इसका एक-एक दाना खा लेना।"

जॉर्ज ने हाना को कसकर गले लगाया, उसकी आँखों पर गिर आए बाल हौले से हटाए। "मैंने माँ-पापा से वादा किया था कि मैं तुम्हारा ध्यान रखूँगा और तुम्हें बिलकुल सही-सलामत घर लाऊँगा ताकि हमारा परिवार फिर से साथ-साथ रह सके। मैं वह वादा तोड़ना नहीं चाहता।" तभी कर्फ्यू की सीटी बजी और जॉर्ज चला गया।

हाना उदास हो गई। भाई से बिछड़ना उससे बर्दाश्त नहीं हो पा रहा था। पहले माँ-पापा और अब जॉर्ज। दुनिया में वह किस कदर अकेली हो गई थी। कभी-कभी जब दूसरी लड़कियाँ उसे खुश करने की कोशिश करतीं, हाना अपना मुँह फेर लेती या उन्हें झिड़ककर कहती, "क्या तुम लोग मुझे अकेला नहीं छोड़ सकते?"

सिर्फ शान्त एला ही थी जो उसे अपना सीमित खाना खाने को मना पाती थी। "याद करो कि तुम्हारे भाई ने क्या कहा था। तुम्हें खुद का खयाल रखना है और मज़बूत बनना है – उसके लिए।"

चार हफ्ते बाद हाना को पता चला कि वह भी पूर्व को जाने वाली है। पुनर्मिलन! "मैं फिर से जॉर्ज से मिलूँगी," हाना ने हरेक को बताया। "वह मेरा इन्तज़ार कर रहा होगा।"

उसने एला को ढूँढा। "तुम मेरी मदद करोगी?" उसने पूछा। "मैं अपने भाई से मिलते समय अच्छी दिखना चाहती हूँ। उसे दिखा देना चाहती हूँ कि मैंने खुद का कितना अच्छा खयाल रखा है।" अपनी खुद की दुश्चिन्ताओं के बावजूद एला अपनी नन्ही सहेली की उम्मीद जगाए रखना चाहती थी। वह हाना की ओर देख मुस्कराई और काम में जुट गई। उसने पम्प से पानी भरा और हाना का चेहरा और उसके उलझे बालों को साफ करने के लिए अपनी साबुन का आखिरी चौकोर टुकड़ा इस्तेमाल किया। कपड़े के एक पतले टुकड़े से उसने हाना के बालों की एक चोटी बनाई। उसके गाल नोचे ताकि वे कुछ गुलाबी लगें। कुछ कदम पीछे हटकर एला ने अपनी कोशिशों का नतीजा देखा। हाना का चेहरा उम्मीद से दमक रहा था। "शुक्रिया एला," हाना ने अपनी सहेली से लिपटते हुए कहा। "तुम न होतीं तो मैं क्या करती भला।" जॉर्ज के भेजे जाने के बाद पहली बार हाना खुश नज़र आ रही थी।

उस रात हाना ने अपने सूटकेस में सामान सजाया। अन्दर रखने को कुछ खास नहीं था: कुछ घिसे-पुराने कपड़े, फ्रीडल की कक्षा में बनाए अपने पसन्दीदा चित्रों में से एक चित्र, एक कहानी की किताब जो एला ने उसे दी थी। सामान रखने के बाद हाना अपने बिस्तर पर लेटी और थेरेसिएनस्टाट में अपनी आखिरी रात बिताने सो गई।

अगली सुबह हाना और किंडरहाइम L410 की कई लड़कियों को एक कतार में रेल पटरियों तक ले जाया गया। नाज़ी पहरेदार हुक्म ठोकते रहे और उनके कुत्ते दाँत फाड़े गुर्राते रहे। कोई कतार से बाहर नहीं निकला।

"हमें कहाँ ले जाया जा रहा है?" हाना ने फुसफुसाकर एला से पूछा। किसी को कुछ पता नहीं था। लड़कियाँ बारी-बारी अँधेरे रेल डिब्बे में चढ़ती गईं, तब तक जब तक कि वह ट्रेन ठसाठस नहीं भर गई। हवा में खटास-सी घुल गई। और फिर चक्के घूमने लगे।

एक पूरा दिन और एक पूरी रात रेलगाड़ी चलती रही। न खाना था, न पानी। और ना ही पाखाना। लड़कियों को अन्दाज़ा तक नहीं था कि यात्रा कितनी लम्बी होगी। उनके गले सूख रहे थे, हड्डियाँ दुखने लगीं, भूख से पेट अकड़ने लगे।

उन्होंने एक-दूसरे को तसल्ली देने की कोशिश में घर के गीत गाए। "मेरे कन्धे का सहारा लो," एला ने धीमे से कहा, "और सुनो हाना।"

सो जब दुख में रोने का मेरा जी करता है
मैं सौ पाँवों वाले कनखजूरे को याद करती हूँ
उसका-सा जीवन बिताने की कल्पना करती हूँ,
और तब अपना जीवन कितना सुहाना लगता है।

लड़कियों ने एक-दूसरे के हाथ थामे। अपनी आँखें मूँदीं और कहीं और होने की कल्पना में खो गईं। हरेक ने कुछ अलग सोचा। जब हाना ने अपनी आँखें मूँदीं, उसे अपने भाई का मज़बूत मुस्कराता चेहरा नज़र आया।

और फिर अचानक, 23 अक्तूबर 1944 की मध्य रात को रेलगाड़ी के पहिए चरमराकर थम गए। दरवाज़े खुले। लड़कियों को डिब्बे से उतरने का हुक्म मिला। यह जगह थी आउश्वित्ज़।

एक गुस्सैल पहेरदार ने उन्हें प्लेटफॉर्म पर सीधे और चुप खड़े रहने का हुक्म दिया। वह एक बड़े से कुत्ते की लगाम को कसकर पकड़े हुए था, जो झपटने को मचल रहा था। पहरेदार ने झटपट समूह को ऊपर-नीचे देखा। उस लड़की की ओर चाबुक फटकारी जिसे अपने लम्बे होने पर हमेशा शर्म आया करती थी। "तुम," उसने कहा, "उस तरफ, दाहिनी ओर!" दूसरी बार एक और बड़ी लड़की की ओर अपनी चाबुक फटकारते हुए उसने कहा, "तुम भी।" फिर उसने प्लेटफॉर्म के किनारे खड़े नौजवान सिपाहियों के झुण्ड को बुलाया। "अब इन्हें ले जाओ!" उसने हाना और बाकी लड़कियों की ओर इशारा कर हुक्म दिया। बड़ी-बड़ी सर्च लाइटों से लड़कियों की आँखें चुँधिया गईं। "अपने सूटकेस प्लेटफॉर्म पर छोड़ दो," सिपाहियों ने आदेश दिया।

हाना और कमरे में उसके साथ रहने वाली लड़कियों को कटखने कुत्तों और वर्दीधारी आदमियों की चौकन्नी नज़रों के बीच एक बड़े लोहे के फाटक से अन्दर ले जाया गया। हाना एला का हाथ ज़ोर से थामे रही। वे बड़े-बड़े बैरकों के पास से गुज़रीं, उन्होंने दरवाज़ों से झाँकते धारीदार वर्दियाँ पहने कैदियों के कंकालनुमा चेहरे देखे। उन्हें एक बड़े-से भवन में घुसने का हुक्म मिला। उनके पीछे एक डरावनी आवाज़ के साथ दरवाज़ा बन्द कर दिया गया।

टेरेज़िन

जुलाई 2000

"सही के निशान का क्या मतलब है?" फूमिको ने हाना ब्रेडी और जॉर्ज ब्रेडी के नाम वाले पन्ने को देखते हुए पूछा।

लुडमिला झिझकी और फिर सावधानी बरतते हुए बोली, "सही के निशान का मतलब है कि व्यक्ति जीवित नहीं बचा।"

फूमिको ने अपनी आँखें फिर पन्ने की ओर झुका लीं। हाना के नाम के सामने सही का निशान था। थेरेसिएनस्टाट में समय गुज़ारने वाले लगभग सभी 15,000 बच्चों की तरह हाना की भी आउश्वित्ज़ में मौत हुई थी।

फूमिको ने सिर झुकाकर आँखें बन्द कर लीं। उसे इस भयानक सच्चाई का पहले से ही एहसास था। पर ज़बानी सुनना, कागज़ पर देखना उसके लिए फिर भी एक धक्का था। फूमिको चन्द मिनटों तक मौन बैठी इस सच्चाई को जज़्ब करने की कोशिश करती रही।

और फिर खुद को सम्हालकर उसने ऊपर देखा। हाना की कहानी खत्म नहीं हुई थी। अब तो फूमिको हाना के बारे में, ज़्यादा से ज़्यादा, बल्कि सब कुछ जान लेना चाहती थी – अपने लिए, जापान में उसके वापस लौटने की राह ताकते बच्चों के लिए और हाना की याद के लिए भी। उसने पक्का इरादा कर लिया था कि इतनी कम उम्र में इतने अन्यायपूर्ण तरीके से खत्म किया गया वह जीवन यों ही भुलाया नहीं जाएगा। यह सुनिश्चित करना ही उसका लक्ष्य बन गया था। अभी तलाश खत्म नहीं हुई थी।

"जॉर्ज के नाम के सामने सही का निशान नहीं है," फूमिको ने कहा। "क्या कोई तरीका है जिससे हम उसके बारे में जान सकें?" वह हकलाते हुए बोली। "उसका क्या हुआ? वह कहाँ गया? क्या वह अब भी ज़िन्दा है?" अगर वह उसे मिल जाए तो उससे हाना के बारे में शायद और पता चले। फूमिको उत्तेजना से काँप रही थी।

लुडमिला ने मेज़ के उस पार बैठी फूमिको को उदास नज़रों से देखा। उसे समझ आ रहा था कि फूमिको जानने के लिए कितनी बेताब है। "मुझे पता नहीं कि उसका क्या हश्र हुआ," उसने धीरे से कहा। "जंग को हुए कितना अर्सा हो गया, है ना। वह दुनिया में कहीं भी जा सकता था। शायद उसने अपना नाम भी बदल लिया हो। या फिर युद्ध के कई सालों बाद वह मर गया हो।"

"उसे ढूँढने में आपको मेरी मदद करनी ही होगी," फूमिको ने निवेदन करते हुए कहा।

लुडमिला ने गहरी साँस ली और फिर से किताबों की अलमारी की ओर मुड़ी जहाँ नामों की सूचियाँ जिल्द-बन्द रखी गई थीं। "हम इनमें सुराग तलाशने की कोशिश करते रह सकते हैं," उसने कहा। अगले एक घण्टे तक फूमिको और लुडमिला नामों से भरी ज़िल्द-बन्द किताबों में जॉर्ज ब्रैडी का उल्लेख ढूँढती रहीं। और आखिरकार एक ज़िक्र उन्हें मिल ही गया।

उसका नाम थेरेसिएनस्टाट के लड़कों के बाल गृह, किंडरहाइम L417 के आवासियों के साथ दर्ज था। सारे नाम 6-6 के समूह में लिखे गए थे, क्योंकि तीन मंज़िले पलंगों वाले हरेक खाट के हर बिस्तर पर दो-दो लड़के साथ सोया करते थे। जब लुडमिला ने जॉर्ज ब्रैडी के साथ दर्ज नाम देखे, तो उसने चौंककर फूमिको को देखा।

"कुर्ट कोटोउक," उसने कहा। "कुर्ट कोटोउक" उसने नाम दोहराया। "यह नाम मैं जानती हूँ। वह ज़िन्दा है। मेरे खयाल से जॉर्ज ब्रैडी का यह साथी प्राग में रहता था, पर कहाँ यह तो मुझे पता नहीं। अगर हम उसे ढूँढ सके तो वह हाना के भाई के बारे में बता पाएगा। बदकिस्मती से, अब यहाँ से मैं आपकी और कोई मदद नहीं कर सकती। प्राग के यहूदी संग्रहालय में कोशिश करो। शायद वहाँ कोई मदद कर सके।"

फूमिको ने लुडमिला की मदद के लिए उसका बार-बार शुक्रिया अदा किया। उसे गले लगाते हुए वादा किया कि वह अपनी तलाश का नतीजा लुडमिला को ज़रूर बताएगी। लुडमिला ने फूमिको को शुभकामनाएँ दीं। फिर फूमिको अपना ब्रीफकेस उठाकर शहर के चौराहे की ओर भागी। प्राग जाने वाली बस किसी भी वक्त आ सकती थी।

प्राग

जुलाई 2000

फूमिको का जहाज़ अगली सुबह तड़के जापान के लिए रवाना होने वाला था। उससे पहले उसके पास अँधेरा होने से पहले सिर्फ चन्द ही घण्टे बचे थे। प्राग में बस से उतरते ही उसने टैक्सी बुलाई। "कृपया, यहूदी संग्रहालय चलें," उसने हाँफते हुए कहा।

जब वह यहूदी संग्रहालय पहुँची तो वो बन्द होने ही वाला था। चौकीदार ने उसे अगले दिन आने को कहा। "पर मैं नहीं आ सकती," फूमिको ने अनुरोध किया। "कल सुबह ही मुझे जापान लौटना है। मैं मिखाएला हायेक से मिलने आई हूँ। कुछ बेहद महत्वपूर्ण चित्र तलाशने में उन्होंने मेरी मदद की थी।" जब चौकीदार किसी सूरत पर राज़ी नहीं हुआ तो फूमिको ने सच्चाई को थोड़ा-सा मरोड़ दिया। "वे मेरा इन्तज़ार कर रही हैं," उसने बड़े विश्वास से कहा। और चौकीदार ने उसे अन्दर जाने दिया।

इस बार किस्मत फूमिको के साथ थी। मिखाएला अपने दफ्तर में थीं और उन्हें हाना की कहानी भी याद थी। फूमिको ने उन्हें ताज़ा जानकारी दी जिसे उन्होंने ध्यान से सुना।

"मैंने भी कुर्ट कोटोउक के बारे में सुना है," मिखाएला ने शान्ति से कहा। फूमिको को विश्वास ही नहीं हुआ। "उनको ढूँढने में मैं आपकी मदद करूँगी," मिखाएला ने वादा किया। वे समझ रही थीं कि फूमिको के पास गँवाने के लिए समय नहीं था।

मिखाएला फोन पर फोन करने लगीं और फूमिको चुपचाप बैठी रही। वे जिससे भी बात करतीं वह उन्हें कोई दूसरा नम्बर देता और तलाश के लिए शुभकामनाएँ भी। आखिरकार उन्होंने उस दफ्तर से सम्पर्क साधा जहाँ श्री कोटोउक कला इतिहासज्ञ के रूप में काम करते थे। उन्होंने फूमिको को फोन थमाया, जिसने अपनी मंशा समझाने की कोशिश की। उस कार्यालय की सचिव मदद तो करना चाहती थी पर उसने बताया कि श्री कोटोउक उसी शाम विदेश यात्रा पर निकलने वाले थे। "माफ करें। उनसे मिल पाना असम्भव है," उसने फूमिको से कहा। "नहीं, वे फोन पर भी नहीं आ सकते।"

मिखाएला ने देखा कि फूमिको का चेहरा उतर गया है। उसने फूमिको से फोन वापस लिया और सचिव से मिन्नत की। "आपको पता नहीं कि यह युवती कितनी परेशान है। उसे कल सुबह ही जापान के लिए निकलना है। यही एक मौका है उसके पास।" आखिरकार सचिव मान गई।

दो घण्टे बाद आसमान में अँधेरा छा गया था और संग्रहालय औपचारिक रूप से बन्द हो गया था। वहाँ काम करने वाले सभी लोग घर लौट चुके थे। पर एक दफ्तर की बत्ती अभी भी चमक रही थी। वहाँ फूमिको और मिखाएला श्री कोटोउक के आने का इन्तज़ार कर रही थीं।

आखिरकार वे आए। भारी शरीर और चमकती आँखों वाले इस व्यक्ति के पास बताने को बहुत कुछ था। "मेरे पास सिर्फ आधा घण्टा है," वे बोले, "फिर मुझे हवाई अड्डे पहुँचना होगा। बेशक मुझे जॉर्ज ब्रैडी याद है। थेरेसिएनस्टाट में हम एक ही पलंग पर सोते थे। हम और भी बहुत कुछ के साझेदार थे। थेरेसिएनस्टाट जैसी जगह पर बने रिश्ते कभी भुलाए नहीं जा सकते। सिर्फ इतना ही नहीं, हम अब भी दोस्त हैं," उन्होंने कहा। "वह टोरॉन्टो, कनाडा में रहता है।"

श्री कोटोउक ने एक छोटी चमड़े की जिल्द वाली डायरी निकाली। "जिसकी आप खोज कर रही हैं, वह यह है," उन्होंने मुस्कराते हुए कहा।

उन्होंने जॉर्ज ब्रैडी का पता लिखा और फूमिको को दे दिया। "ओह, श्री कोटोउक बहुत-बहुत शुक्रिया," फूमिको ने कहा।

"शुभकामनाएँ," उन्होंने फूमिको से कहा। "मुझे बेहद खुशी है कि जापान के बच्चे नरसंहार के सबक को समझना चाहते हैं।" और फिर श्री कोटोउक, अपना सामान थामे दफ्तर से लगभग उड़ते से निकल गए।

फूमिको की बाँछें खिल उठी थीं। उसकी कोशिशों ने रंग दिखाया था। उसने मिखाएला को बताया कि मदद के लिए वह उसकी कितनी एहसानमन्द है।

अगली सुबह फूमिको जापान वाले जहाज़ में अपनी सीट पर लम्बी उड़ान के लिए बैठ गई। वह अभी भी उत्तेजित थी। उसने याद करने की कोशिश की कि केन्द्र के बच्चों के लिए उसके पास क्या-क्या खबरें हैं। जब उसने हाना के बड़े भाई के बारे में सोचा, तो उसे बरबस अपनी छोटी बहन याद आ गई। उससे तीन ही साल तो छोटी थी वह भी। फूमिको हमेशा उसकी देखभाल करती थी। उसने कल्पना करने की कोशिश की कि अगर वह कभी खतरे में हो तो फूमिको क्या करेगी। यह सोचते ही उसकी कँपकँपी छूट गई। वह खिड़की से बाहर देखने लगी और हाना की कहानी बार-बार उसके दिमाग में घूमती रही। घण्टे भर बाद वह गहरी नींद सो चुकी थी, एक लम्बे अर्से बाद की गहरी नींद।

तोक्यो

अगस्त 2000

तोक्यो लौटकर फूमिको ने नन्हे पंख की एक खास बैठक बुलाई। उसने उसके सदस्यों को अपनी रोमांचक यात्रा की हरेक बात विस्तार से बताई। दुखद खबर ही सबसे पहले सुनाई। उसके चारों ओर गोल घेरे में बैठे बच्चों को फूमिको ने धीमी आवाज़ में वह खबर सुनाई जिसकी कल्पना वे पहले से ही कर चुके थे। हाना की मौत आउश्वित्ज़ में हुई थी।

"पर मेरे पास एक सुखद आश्चर्य वाली खबर भी है," फूमिको ने कहा। बच्चों के मुरझाए चेहरे खिल उठे। "हाना का एक भाई भी था – जॉर्ज – और वह जीवित बच गया था!"

फौरन सवालों की झड़ी लग गई। "वे कहाँ हैं?" माइको ने पूछा। "वे कितने बड़े हैं?" एक लड़के ने पूछा। "क्या उन्हें पता है कि हमारे पास हाना का सूटकेस है?" अकीरा ने जानना चाहा। फूमिको जो कुछ जानती थी, वह सब उसने उन्हें बताया। और कहा कि वह उसी रात देर तक रुककर जॉर्ज को एक खत लिखेगी।

"क्या हम खत के साथ कुछ भेज सकते हैं?" माइको ने जानना चाहा। बड़े बच्चे केन्द्र में इधर-उधर, शान्त कोने तलाशकर बैठ गए ताकि कविताएँ लिख सकें। "मैं क्या करूँ?" अकीरा ने माइको से पूछा।

"हाना का चित्र बनाओ," उसने सुझाया।

"पर मैं तो जानता ही नहीं कि वह कैसी दिखती है," वह बोला।

"तुम्हें अपनी कल्पना में वह जैसी लगे, वैसी ही बनाओ," माइको बोली। अकीरा ने वही किया।

फूमिको ने अपना खत बेहद सावधानी से लिखा। उसे पता था कि जॉर्ज को खत पाकर ज़बरदस्त झटका लगेगा। वह जानती थी कि नरसंहार से बच निकले कुछ
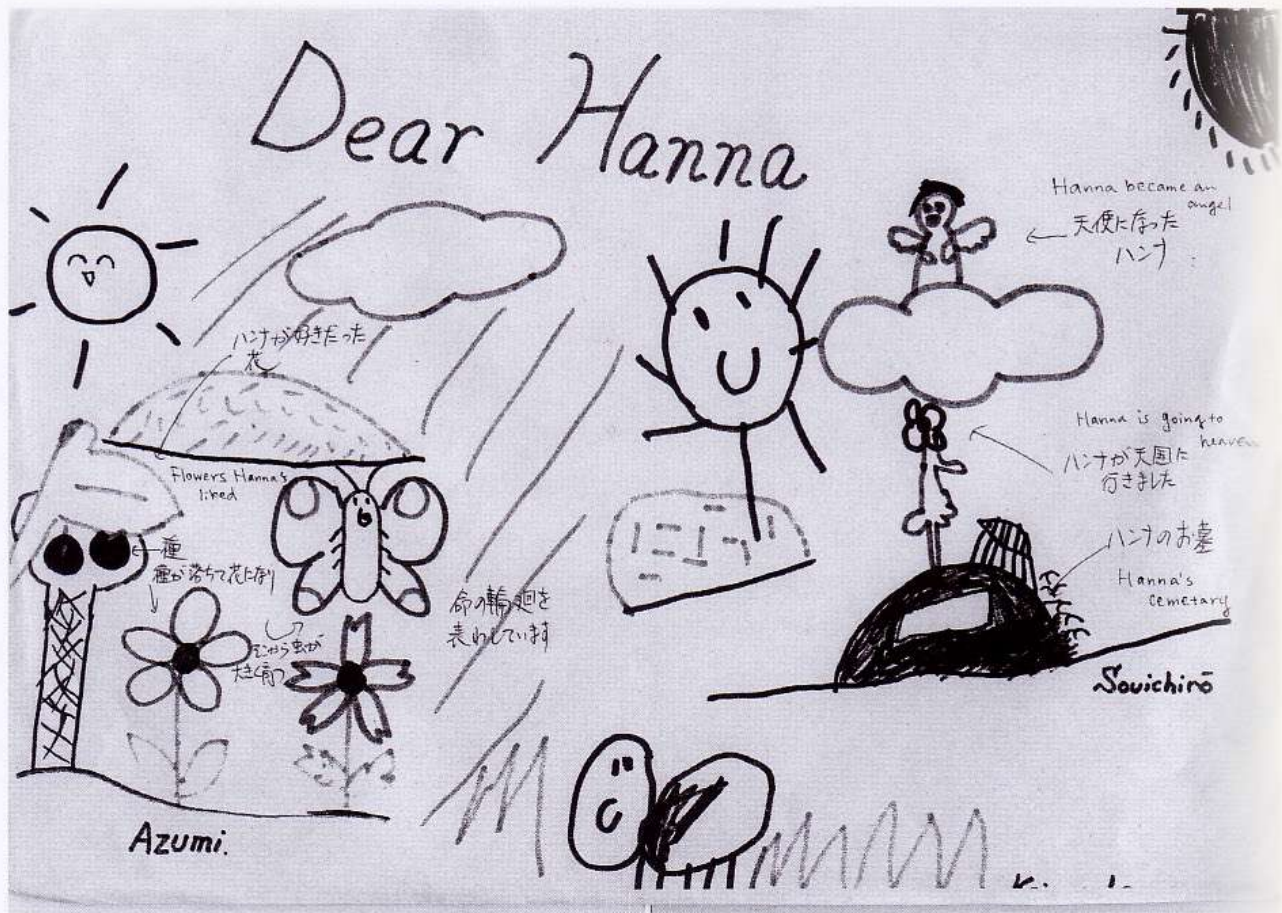
नरसंहार केन्द्र के बच्चों द्वारा हाना को श्रद्धांजलि। उन्होंने हाना के नाम की जर्मन वर्तनी का उपयोग किया है क्योंकि सूटकेस पर वैसा ही लिखा था।

लोग अपने अनुभवों के बारे में कभी बात तक नहीं करना चाहते। उसे चिन्ता थी कि शायद उनकी यादें इतनी कड़वी और दुखद हों कि वे हाना के सूटकेस या जापान के नरसंहार केन्द्र के बारे में कुछ भी सुनना न चाहें।

फूमिको ने हाना के चित्रों की कॉपियाँ बनाईं और उन्हें सावधानी से एक पैकेट में, केन्द्र के बच्चों की कविताओं, लेखों और चित्रों के साथ रख दिया। फिर वह पार्सल लेकर डाकघर गई और एक उम्मीद के साथ उसे कनाडा रवाना कर दिया।

टोरॉन्टो कनाडा

अगस्त 2000

अगस्त की गर्म और धूपदार दोपहर थी। 72 वर्षीय जॉर्ज ब्रैडी काम से जल्दी घर लौट आए थे क्योंकि वे खाली घर में शान्ति से बैठकर कुछ बिलों का भुगतान वगैरह करना चाहते थे। वे खाने की मेज़ पर बैठे ही थे कि उन्होंने डाकिए की पदचाप सुनी, खाँचे से चिट्ठियों का डाला जाना और फर्श पर उनका फटाक् से गिरना भी सुना। उन्होंने सोचा, डाक बाद में उठाऊँगा। पर तभी घण्टी बजी।

जब दरवाज़ा खोला तो पाया कि डाकिया वहीं खड़ा है। "यह खाँचे में घुसा ही नहीं," उसने जॉर्ज को एक पैकेट थमाते हुए कहा। पार्सल पर जापान का ठप्पा लगा था। यह क्या हो सकता है? जॉर्ज ने सोचा। वे जापान में किसी को नहीं जानते थे।

पैकेट खोलकर खत पढ़ना शुरू करते ही जॉर्ज का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। उन्होंने आँखें बन्द कर लीं। उन्हें फिर से खोलकर मिचमिचाकर देखा कि जो पढ़ रहे थे वह सच तो है ना। क्या यह कोई दिन का सपना तो नहीं है?

हाना को खोना जॉर्ज का बेहद निजी और सबसे गहरा दुख था। पिछले 50 सालों से भी ज़्यादा समय से वे उस दर्द के साथ रहते आए थे और अभी तक इस एहसास से उबर नहीं पाए थे कि वे अपनी छोटी बहन की रक्षा नहीं कर पाए।

अब, न जाने कैसे, आधी दुनिया पार एक देश में उसकी कहानी सुनाई जा रही थी। उसके जीवन को सम्मानित किया जा रहा था। जॉर्ज सकते में थे। वे बैठ गए और अपने दिमाग को पचपन साल पीछे भटक जाने दिया।

जनवरी 1945 में जब आउश्वित्ज़ मुक्त करवाया गया, उस समय जॉर्ज ब्रैडी 17 साल का था। वह शिविर की भयावह यातनाओं से इसलिए बच सका था क्योंकि वह किशोर और तन्दुरुस्त था, किस्मत ने उसका साथ दिया था और थेरेसिएनस्टाट में सीखे गए नल-कल सुधारने के हुनर का वह इस्तेमाल कर पाया था। जिस समय उसे आज़ाद कराया गया वह बेहद कमज़ोर और दुबला हो चुका था। पर जॉर्ज ने

जॉर्ज ब्रेडी, वर्तमान में

ठान लिया था वो नोवे मेश्तो – अपने माँ-पापा और छोटी बहन हाना के पास ज़रूर पहुँचेगा। वो अपने परिवार को फिर से एक साथ लाने के लिए बहुत बेताब था।

पैदल, रेलगाड़ी से, लोगों से मदद लेकर सफर करते हुए जॉर्ज मई 1945 को अपने प्यारे घर पहुँचा। वह सीधे फूफा लुडविक और बुआ हेड्डा के घर गया। यही तो वो आखिरी जगह थी जहाँ उसे परिवार, प्यार और सुरक्षा मिली थी। दरवाज़े पर अपने भाँजे को देख बुआ-फूफा उस पर गिर से पड़े – लिपटाते, चूमते, सहलाते, आँसू बहाते – उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि जॉर्ज ज़िन्दा बच गया है।

पर मिलन का यह अपार सुख जल्दी ही खत्म हो गया। "माँ-पापा कहाँ हैं?" जॉर्ज ने पूछा। लुडविक और हेड्डा को उसे वह भयानक सच बताना ही पड़ा। मारकेटा को रेवन्सब्रुक से आउश्वित्ज़ भेजा गया और 1942 में उसकी हत्या कर दी गई थी। कारेल को भी उसी साल मार दिया गया था। "और हाना?" जॉर्ज ने फुसफुसाकर पूछा। बुआ और फूफा सिर्फ इतना जानते थे कि उसे भी आउश्वित्ज़ भेजा गया था।

कई महीनों तक जॉर्ज के मन में एक झीनी-सी उम्मीद थी कि कहीं किसी तरह हाना उसे मिल जाएगी। वह हर लड़की के चेहरे में, चोटी में बँधे बालों की सरसराहट में, हर तन्दुरुस्त बच्चे के अल्हड़ कदमों में हाना को तलाशता। एक रोज़ प्राग की मुख्य सड़क पर उसका सामना एक युवती से हुआ। वह उसे देखकर रुक गई।

"जॉर्ज?" उसने पूछा। "क्या तुम जॉर्ज ब्रैडी हो, हाना के भाई? मेरा नाम मार्टा है। मैं हाना को जानती थी। थेरेसिएनस्टाट में हम सभी बड़ी लड़कियाँ उसे बहुत चाहती थीं।" जॉर्ज मार्टा की आँखों में झाँककर खबर पाने की कोशिश करता रहा, उम्मीद से। वह समझ गई कि जॉर्ज को अपनी बहन के अन्तिम सच के बारे में पता नहीं है। "जॉर्ज," उसने उसका हाथ थामकर, शान्ति से पर साफ-साफ कहा, "हाना जिस दिन आउश्वित्ज़ पहुँची, उसे उसी दिन गैस चेम्बर में भेज दिया गया था। मुझे बेहद दुख है जॉर्ज, पर हाना मर चुकी है।" जॉर्ज के घुटने जैसे अकड़ गए और दुनिया अँधेरी हो गई।

टोरॉन्टो

अगस्त 2000

जब जॉर्ज को अपने माँ-पापा और बहन की नृशंस हत्याओं का पता चला था तब से पचास से भी ज़्यादा सालों में बहुत कुछ घट चुका था। 17 साल की उम्र में जॉर्ज ने नोवे मेश्तो छोड़ दिया था। वह यूरोप के एक से दूसरे शहर भटकता रहा – अपने एकमात्र अनमोल खज़ाने को लेकर – फूफा लुडविक और बुआ हेड्डा द्वारा छुपाकर रखा गया परिवार के फोटो का बक्सा। फिर 1951 की शुरुआत में वह टोरॉन्टो चला आया और वहाँ नरसंहार से बचे एक दूसरे व्यक्ति के साथ प्लम्बिंग का धन्धा शुरू किया। धन्धा सफल रहा। जॉर्ज ने शादी की और तीन बेटों व काफी बाद एक बेटी का पिता बना।

जॉर्ज को इस बात पर गर्व था कि हॉलोकॉस्ट के दौरान झेली गई तमाम तकलीफों और अपने माँ-पापा, बहन की नाज़ियों द्वारा की गई हत्याओं के बावजूद वह अपने जीवन में आगे बढ़ सका था। वह एक सफल व्यवसायी था और एक शानदार पिता भी। वह खुद को एक स्वस्थ इन्सान मानता था और अपने युद्ध के अनुभवों को काफी हद तक पीछे छोड़ आया था। पर अपनी तमाम उपलब्धियों, तमाम खुशियों के बावजूद उसे अपनी सुन्दर-सी छोटी बहन और उसकी भयावह तकदीर की यादों का साया हमेशा सालता था।

और अब, आधी दुनिया पार से आया यह खत उसे बता रहा था कि उसकी बहन का सूटकेस किस प्रकार जापानी बच्चों की नई पीढ़ी को नरसंहार के बारे में जानने में मददगार साबित हो रहा था। फूमिको के खत ने बहुत ही विनम्रता के साथ उसकी मदद भी चाही थी।

> *अगर मेरा खत आपको अपने दुखद अनुभवों की याद दिलाकर ठेस पहुँचाए तो मुझे माफ करें। पर अगर आप हमें अपनी और हाना की कहानी बता सकें तो मैं आपकी आभारी रहूँगी। हम जानना चाहते हैं कि आपको शिविर भेजे जाने से पहले आपका और हाना का जीवन कैसा*

था, आप किस बारे में बातें करते थे, आपके और उसके कौन-से सपने थे। हमारी रुचि हरेक उस बात में है जो जापान के बच्चों को आपके और हाना के करीब लाने में मददगार हो सके। हम यह समझना चाहते हैं कि पूर्वाग्रह, असहनशीलता और नफरत ने यहूदी बच्चों का क्या हाल किया था।

हम आपके आभारी होंगे, अगर आप हमें अपने परिवार के कुछ फोटो दे सकें, अगर यह सम्भव हो तो। मैं जानती हूँ कि नरसंहार से बचे अधिकांश लोग अपने परिवारों के साथ-साथ अपने फोटो आदि भी खो चुके हैं। पर अगर आपके पास कोई भी फोटो हो तो इससे हमें हमारे उद्देश्य में मदद मिलेगी कि जापान का हरेक बच्चा हॉलोकॉस्ट के बारे में जाने-सीखे। तोक्यो नरसंहार केन्द्र के हम कार्यकर्ता और नन्हे पंख के सभी बच्चे यह जानकर बेहद उत्तेजित हैं कि हाना का एक भाई भी था और वह बच सका था।

खत में "फूमिको इशिओका" का हस्ताक्षर था।

जॉर्ज को विश्वास नहीं हो रहा था। कैसा अद्भुत जुड़ाव और कैसे विचित्र संयोगों ने तीन दुनियाओं को आपस में जोड़ दिया था: जापान के बच्चों की दुनिया, कनाडा में बसे जॉर्ज की दुनिया और चेकोस्लोवाकिया की एक यहूदी लड़की की खो चुकी दुनिया, जो सालों पहले मर चुकी थी। जॉर्ज ने गाल पर लुढ़क आए आँसू पोंछे और खुद ब खुद मुस्करा दिया। हाना का नन्हा-सा चेहरा उसे साफ नज़र आ रहा था। उसे लगा कि वह उसकी खिलखिलाहट सुन पा रहा है और उसके हाथों में हाना के मुलायम हाथों का स्पर्श है। जॉर्ज लकड़ी की बड़ी अलमारी के पास गया और दराज़ से एक फोटो एलबम निकाल लाया। वह जल्द से जल्द फूमिको इशिओका से सम्पर्क करना चाहता था।

〒160-0015 東京都新宿区大京町28-105
TEL:03-5363-4808 FAX:03-5363-4809
28-105 Daikyo-cho,Shinjuku-ku Tokyo, 160-0015 JAPAN
TEL:+81-3-5363-4808 FAX:+81-3-5363-4809
E-mail : Holocaust@Tokyo.email.ne.jp
Homepage : http://www.ne.jp/asahi/holocaust/tokyo

~For Children, Builders of Peace

Mr. George Brady
23 Blyth Hill Road
Toronto 12, M4N 3L5
CANADA

August 22, 2000

Dear Mr. Brady,

We take a liberty of addressing and telling you about our activities in Japan. My name is Fumiko Ishioka and I am Director of Tokyo Holocaust Education Resource Center. In July this year I met with Mr. Kurt Jiri Kotouc in Prague and I got your address from him. The reason why I am writing to you is because we are now exhibiting your sister, Hanna Brady's suitcase at our Center. Please forgive me if my letter hurts you reminding you of your past difficult experiences. But I would very much appreciate it if you could kindly spare some time to read this letter.

Please let me start with a little explanation on what we do in Japan. Tokyo Holocaust Education Resource Center, established in October 1998, is a non-profit, educational organization that aims at further promoting understanding of the history of the Holocaust especially among young children in this country. Children here do not have a chance to learn about the Holocaust, but we believe it is our responsibility too to let our next generation learn the lessons of the Holocaust so that such a tragedy would never be repeated again anywhere in the world. As well as learning the truth of the Holocaust, it is also very important for children, we believe, to think about what they can do to fight against racism and intolerance and to create peace by their own hands.

Besides welcoming children at our Center for exhibition and study programs, this year we organized a pair of traveling exhibition, "The Holocaust Seen Through Children's Eyes" in order to reach more children living far from our Center. For this project, we borrowed some children's memorial items from individuals and museums in Europe, one of which is Hanna Brady's suitcase from the museum of Auschwitz. Many children are now visiting our Center to see this suitcase to learn about the Holocaust. In June, furthermore, we held the Children's Forum on the Holocaust 2000, where our Center's children's group "Small Wings" did a little opening performance on Hanna's suitcase. "Small Wings" is a group of children, aged from 8 to 18, who write newsletters and make videos to let their friends know about the Holocaust and share what they learn from it. At the Forum they decided to use Hanna's suitcase to do an introduction for their friends who have never heard of the Holocaust. It successfully helped participants of the Forum focus on one little life, among one and a half million, lost during the Holocaust, and think about importance of remembering this history.

When I received the suitcase from the museum of Auschwitz, all the information I had were things written on the suitcase, her name and her birthday, and from the Terezin memorial book I got the date when she was deported to Auschwitz. I could also find 4 of her drawings from Terezin. But that was all. Hoping to get more information on Hanna, I went to Terezin in July, when I found your name on the list I got from the ghetto museum and heard that you survived. I was then so lucky to find Mr.Kotouc in Prague and met with him, from whom I heard you now live in Toronto. Those children of "Small Wings" were all so excited to know Hanna had a brother and he survived.

I was wondering if you would kindly be able to tell us about you and Hanna's story, the time you spent with Hanna before sent to the camp, things that you talked with her, you and her dreams, and anything that would help children here feel close to you and Hanna to understand what prejudice, intolerance and hatred did to young Jewish children. If possible, I would be grateful if you could lent us any kind of memorial items such as your family's photo, and so on. It will greatly help us further promote our goal to give every child in Japan a chance to learn about the Holocaust.

Thank you very much for your time. I would very much appreciate your kind understanding for our activities.

I look forward to hearing from you.

With kindest regards,

Fumiko Ishioka
Director
Tokyo Holocaust Education Resource Center

फूमिको का जॉर्ज के नाम खत

तोक्यो

सितम्बर 2000

अपना खत टोरॉन्टो के लिए रवाना करने के बाद से ही फूमिको बेचैन-सी हो गई थी। क्या जॉर्ज ब्रैडी जवाब देंगे? क्या वे हमें हाना के बारे में और जानने में मदद करेंगे? जो डाकिया केन्द्र की चिट्ठी-पत्री लाता था वह भी फूमिको की बेचैनी से वाकिफ था। उसे केन्द्र के दरवाज़े की ओर बढ़ता देखते ही फूमिको पूछती, "आज कनाडा से कुछ आया है?" उसे फूमिको की निराशा अच्छी नहीं लगती थी, जब दिनोंदिन उसका जवाब ना होता।

फिर महीने के आखिरी दिन फूमिको केन्द्र में 40 मेहमानों का स्वागत कर रही थी। वे शिक्षक और विद्यार्थी थे जो हॉलोकॉस्ट के बारे में जानने और सूटकेस देखने आए थे। उसे कनखियों से एक खिड़की के उस ओर डाकिया नज़र आया जो तेज़ चाल से बड़ी-सी मुस्कराहट लिए आगे बढ़ा आ रहा था। फूमिको मेहमानों से माफी माँग उसकी ओर दौड़ी। "यह रहा," उसने दमकते चेहरे से कहा और फूमिको को टोरॉन्टो से आया एक मोटा-सा लिफाफा पकड़ा दिया।

"शुक्रिया," फूमिको चिल्लाते हुए बोली, "मेरा दिन खुशनुमा बनाने के लिए शुक्रिया!"

वह लिफाफा लेकर अपने दफ्तर गई। अन्दर रखे कागज़ की तह खोलते ही फोटो निकल आए। हाना के चार फोटो थे, जिसमें उसका मुस्कराता चेहरा चमकदार सुनहरे बालों से घिरा था।

फूमिको की चीख निकल पड़ी। आपा जो खो चुकी थी। कुछ मेहमान शिक्षक और विद्यार्थी उसके दफ्तर के दरवाज़े की ओर दौड़े चले आए। "क्या हुआ? कुछ गड़बड़ है क्या?" उन्होंने जानना चाहा।

"कोई गड़बड़ नहीं है," उसने लड़खड़ाती ज़बान से कहा। "मैं बता नहीं सकती कि मैं कितनी खुश हूँ। देखिए तो, यह हाना का फोटो है। यही वह सुन्दर-सी नन्ही लड़की है जिसकी कहानी जानने के लिए हमने इतनी मेहनत की है।"

फोटो के साथ जॉर्ज का एक लम्बा-सा खत भी था। उससे फूमिको को नोवे मेश्तो में बीते हाना के खुशगवार बचपन, उसके परिवार, स्कीइंग और स्केटिंग के उसके शौक के बारे में पता चला। यह जानना उसे कुछ सुकुन दे गया कि युद्ध के सर्वनाश के पहले हाना एक सुखद ज़िन्दगी बिता सकी थी।

और फूमिको ने जॉर्ज के बारे में भी जाना। कनाडा में उसकी ज़िन्दगी, उसके बच्चों और पोतों के बारे में पढ़कर फूमिको खुशी से फूली नहीं समा रही थी। वह रोने लगी। वह बच सका, उसने खुद से बार-बार कहा। वह सच में बच गया। और सिर्फ इतना ही नहीं, उसका एक सुन्दर-सा परिवार है। नन्हे पंख के बच्चों को यह खबर सुनाने को फूमिको बेताब थी।

हाना

तोक्यो

मार्च 2001

"शान्त हो जाओ," फूमिको ने मुस्कराते हुए कहा। "वे जल्दी ही यहाँ होंगे, मैं वादा करती हूँ।"

पर उस सुबह उसके कहने पर भी बच्चों की उत्तेजना शान्त नहीं हुई। वे केन्द्र में इधर-उधर चहकते हुए मँडराते रहे, अपनी कविताएँ जाँचते, सैकड़ों बार अपने कपड़े ठीक करते, बेवकूफी भरे चुटकुले सुनाते ताकि समय जल्दी से कट जाए। माइको भी, जिसका काम सबको शान्त रखना था, खुद को सम्हाल नहीं पा रही थी।

आखिरकार इन्तज़ार की घड़ियाँ खत्म हुईं। जॉर्ज ब्रैडी आ पहुँचे। और वे अपने साथ अपनी 17 वर्षीय बेटी लारा हाना को लाए थे।

अब बच्चे एकदम शान्त हो गए। केन्द्र के मुख्य द्वार पर वे जॉर्ज के पास घिर आए। जापानी रीति से कमर तक झुककर उनका अभिवादन किया। जॉर्ज भी झुके। अकीरा ने जॉर्ज को रंग-बिरंगी ऑरीगेमी से बनी माला पहनाई। बच्चे एक-दूसरे को हौले से धकियाकर जॉर्ज के करीब खड़े होने का मौका तलाशते रहे। पिछले कई महीनों से फूमिको से जॉर्ज के बारे में इतना कुछ सुनने के बाद उन्हें अपने बीच पाकर वे बेहद उत्तेजित थे।

फूमिको ने जॉर्ज का हाथ थामा। "हमारे साथ चलिए, चलकर अपनी बहन का सूटकेस देख लीजिए।" वे प्रदर्शनी स्थल की ओर बढ़े।

और वहाँ बच्चों से घिरे जॉर्ज ने, जिनका एक हाथ फूमिको ने और दूसरा उनकी बेटी लारा ने थामा हुआ था, हाना का सूटकेस देखा।

अचानक एक असहनीय उदासी ने जॉर्ज को घेर लिया। सामने सूटकेस था। उस पर उसका नाम लिखा था। हाना ब्रैडी। उसकी सुन्दर, मज़बूत, शैतान, उदार और मस्तीखोर बहन। कितनी छोटी उम्र में और किस भयानक तरीके से मरी थी वह। जॉर्ज ने सिर झुकाया और आँसुओं को मुक्त बहने दिया।

जॉर्ज ब्रेडी के जापान और नरसंहार केन्द्र के दौरे के समय सूटकेस का चित्र पकड़ी फूमिको और बच्चों से बात करते जॉर्ज

पर, कुछ मिनटों बाद, नज़रें उठाईं तो उन्हें अपनी बेटी दिखाई दी। फूमिको दिखाई दी जिसने उन्हें ढूँढने और हाना की कहानी जानने में इतनी मेहनत की थी। और उन्होंने उन जापानी बच्चों के उत्सुक चेहरे देखे जिनके लिए हाना इतनी महत्वपूर्ण और जीवन्त बन गई थी।

जॉर्ज को महसूस हुआ कि आखिरकार हाना की एक ख्वाहिश सच में पूरी हो सकी थी। हाना एक शिक्षिका बन गई थी, क्योंकि उसके कारण – उसके सूटकेस और उसकी कहानी के कारण हज़ारों जापानी बच्चे उन मूल्यों को सीख रहे थे जो जॉर्ज को दुनिया में सबसे महत्वपूर्ण लगते थे: सहनशीलता, सम्मान और सहानुभूति। फूमिको और इन बच्चों ने मुझे कैसा नायाब तोहफा दिया है, जॉर्ज ने सोचा। और हाना को कैसा अनूठा सम्मान।

फूमिको ने बच्चों को गोल घेरे में बैठने को कहा। जैसे-जैसे बच्चे एक-एक करके जॉर्ज को हाना के बारे में लिखी कविताएँ और चित्र दे रहे थे, फूमिको का चेहरा

खुशी से खिलता जा रहा था। सभी के उपहार दे चुकने के बाद, माइको उठी और एक गहरी साँस लेकर उसने ज़ोर से एक कविता पढ़ी:

हाना ब्रैडी, 13 वर्षीय लड़की, इस सूटकेस की मालकिन थी।

55 साल पहले, 18 मई 1942 को – हाना की ग्यारहवीं सालगिरह के दो दिन बाद – उसे चेकोस्लोवाकिया में टेरेज़िन ले जाया गया।

23 अक्तूबर 1944 को, खचाखच भरी मालगाड़ी में ठूँसकर, उसे आउश्वित्ज़ भेज दिया गया।

वहाँ उसे फौरन गैस चेम्बर में ले जाया गया।

लोगों को सिर्फ एक ही सूटकेस ले जाने की छूट थी।

सोचती हूँ हाना ने अपने सूटकेस में क्या रखा होगा।

आज हाना 69 साल की होती, पर उसका जीवन तब ही थम गया जब वह 13 साल की थी।

सोचती हूँ, वह कैसी लड़की रही होगी।

टेरेज़िन में उसके बनाए गए कुछ चित्र – सिर्फ यही चीज़ वह हमारे लिए छोड़ गई है।

ये चित्र हमें क्या बताते हैं?

उसके परिवार की सुखद यादें?

भविष्य के सपने और उम्मीदें?

क्यों मारा गया उसे?

एक ही कारण था।

वह यहूदी जन्मी थी।

नाम: हाना ब्रैडी। जन्मदिन: 16 मई 1931।

अनाथ।

हम, नन्हे पंख, जापान के हरेक बच्चे को बताएँगे कि हाना के साथ क्या हुआ।

हम, नन्हे पंख, कभी नहीं भूलेंगे कि 15 लाख यहूदी बच्चों के साथ क्या हुआ।

हम बच्चे दुनिया में अमन कायम रखने के लिए कुछ कर सकते हैं – ताकि भविष्य में फिर कभी नरसंहार न हो।

– नन्हे पंख, तोक्यो, जापान द्वारा दिसम्बर 2000 में रचित। फूमिको इशिओका द्वारा मूल जापानी से अँग्रेज़ी में अनुदित।

सबसे बाएँ में माइको पढ़ रही है और मंच पर नन्हे पंख के सदस्य पोस्टर उठाए हैं जिसमें लिखा है - "21वीं सदी में शान्ति कायम करने के लिए आइए हम सीखें, सोचें और काम करें।"

उपसंहार

हाना के सूटकेस की कहानी में हमारे लिए और भी अचरज भरे हुए हैं। मार्च 2004 में पोलैंड की यात्रा के दौरान जॉर्ज और फूमिको को पता चला कि हाना का असली सूटकेस, हॉलोकॉस्ट की तमाम दूसरी चीज़ों के साथ, 1984 में बर्मिंघम, इंग्लैंड में लगी एक संदिग्ध आग में नष्ट हो गया था।

फिर आउश्वित्ज़ संग्रहालय ने एक फोटो की मदद से उसकी हूबहू प्रतिकृति बनवाई थी। यही प्रतिकृति फूमिको और नन्हे पंख को तोक्यो में मिली थी। आउश्वित्ज़ संग्रहालय की नीति यह है कि वे किसी वस्तु को उधार मँगवाने वाले को यह बता देते हैं कि वह वस्तु असली है या उसकी प्रतिकृति। पर इस बार उनसे भूल हो गई। जॉर्ज और फूमिको को पोलैंड यात्रा के पहले पता नहीं था कि सूटकेस एक प्रतिकृति है।

पीछे पलटकर देखने पर, इस तलाश में जुटे सभी लोग आउश्वित्ज़ संग्रहालय के क्यूरेटरों के प्रति आभारी हैं कि उन्होंने सूटकेस की जस की तस प्रतिकृति बनाने की ज़हमत उठाई। उसके बिना फूमिको कभी हाना की तलाश नहीं करती। उसे कभी जॉर्ज नहीं मिलता। और हमारे पास हाना के सूटकेस की कहानी नहीं होती।

हाना का सूटकेस बीस से भी अधिक भाषाओं में दुनिया के सैकड़ों-हज़ारों बच्चों द्वारा पढ़ी जा रही है। फूमिको, जॉर्ज और हाना का सूटकेस यात्राएँ कर हाना की कहानी, इतिहास के सबक और सहनशीलता का सन्देश बाँट रहे हैं।

फोटोः चुगोकू अखबार
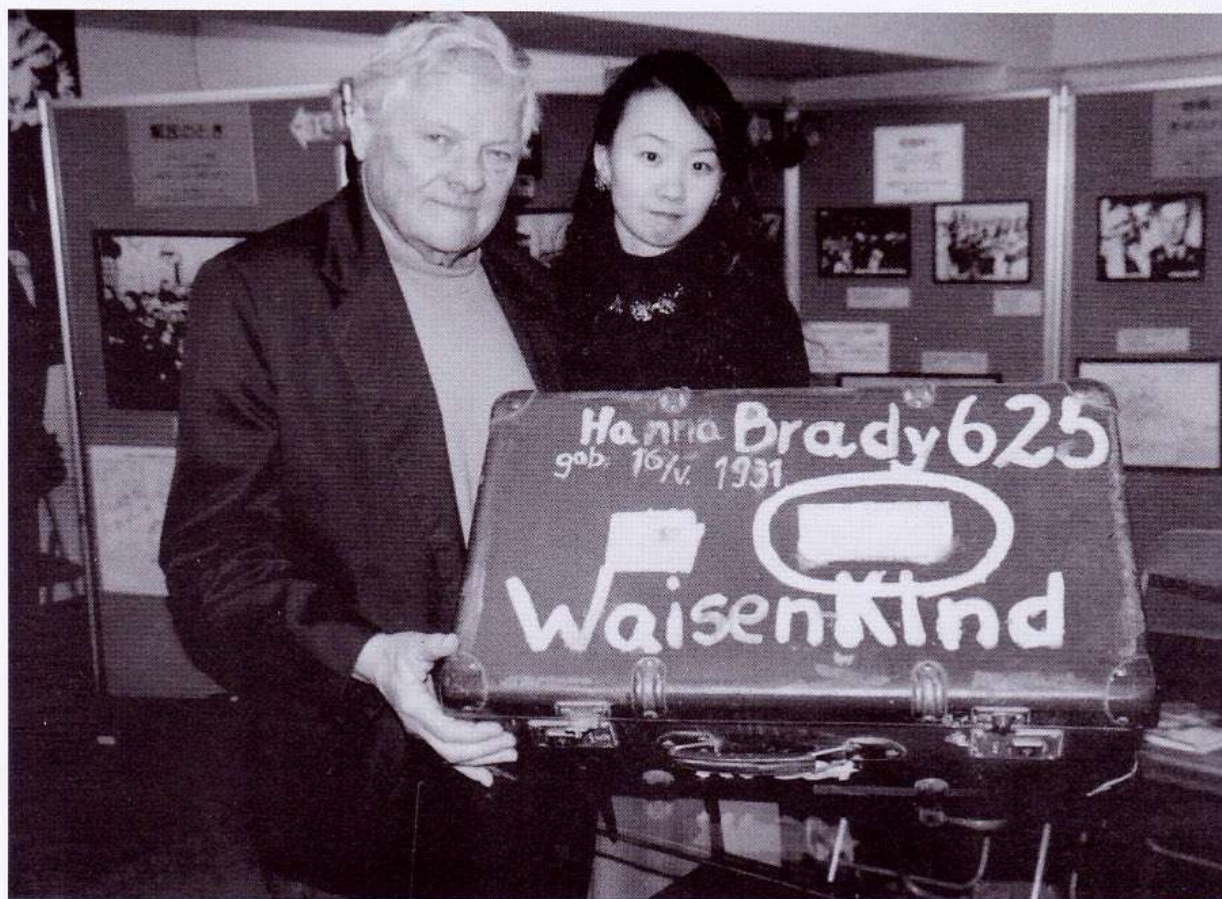
आभार

सबसे पहले मैं जॉर्ज ब्रेडी और फूमिको इशिओका को धन्यवाद देना चाहती हूँ। यह उनकी कहानी है। दोनों ने अनूठे समर्पण और उदारता के साथ इस किताब की रचना में मदद की है। वे बेहद संकल्पित व सहृदय व्यक्ति हैं, जो दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने की व हाना ब्रेडी की यादों को ध्यान और सम्मान दिलाने की इच्छा से ओत-प्रोत हैं। मैं उन्हें सलाम करती हूँ।

पहली बार जब मैंने कैनेडियन ज़्यूइश न्यूज़ में पॉल लुन्गेन के लेख से हाना के सूटकेस के बारे में जाना तो मेरा दिल उछल पड़ा। इस कहानी ने मुझे कुछ यूँ छुआ कि अपने 'निर्वासन' से निकलकर बारह सालों बाद मैंने अपनी पहली रेडियो डॉक्यूमेंट्री बनाने का फैसला किया। नतीजा था, "हाना का सूटकेस" जो *सीबीसी रेडियो वन* के "द संडे एडिशन" में जनवरी 2001 में प्रसारित हुआ।

प्रसारण के बाद मुझे पहला फोन रुँआसी मार्गी वुल्फ का मिला, जिसने उसी समय कहा कि मुझे यह किताब ज़रूर लिखनी है। मार्गी पूरी दुनिया में मेरे सबसे पसन्दीदा लोगों में से हैं – एक सच्ची दोस्त, एक मसखरी, पगली और बेहद प्रतिभावान महिला, जिसे अब मैं बनावटी रूखेपन के साथ 'मेरी प्रकाशक' कह सकती हूँ।

मार्गी के साथ सारा स्वार्त्ज़ ने सम्पादकीय प्रक्रिया को एक स्पष्ट व कोमल स्पर्श दिया। जैफरी कैंटन और सेकंड स्टोरी प्रेस की महिलाओं, कैरोलीन फॉस्टर व लौरा मैक्कर्डी, ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिए। रेनॉल्ड गोन्ज़ाल्विस जानते हैं कि उनके धीरज और रेडियो स्टूडियो व कम्प्यूटर की उनकी दक्षता के बिना मेरा जीवन आज जितना उलझा हुआ है, उससे भी कहीं ज़्यादा उलझा होता। कारमेलिटा टेनेराइफ को उनकी सतत देखभाल और टेरेसा ब्रेडी को उनकी दरियादिली के लिए शुक्रिया।

मेरी धमाकेदार महिला दोस्तों की मण्डली – सुजान बॉयस, केट कॉकरन, जॉय क्रिसडेल, ब्रूक फोर्ब्स, फ्रैन्सीन पैलेटियर, जेरैल्डाइन शर्मन और टैलिन वर्टेनियन – ने इस लेखन परियोजना के दौरान मेरी हौंसला अफज़ाई की, बच्चों की देखभाल की और हर सम्भव मदद दी। मैं नौ वर्षीय मैडेलाइन कॉकरान को विशेष धन्यवाद देना

चाहती हूँ, जो उन शुरुआती लोगों में से थे जिन्होंने पाण्डुलिपि को पढ़ा था। उसके और उसकी माँ के सुझाव उम्दा थे!

कोई भी बेटी अपने माँ-पापा से इससे ज़्यादा सहयोग और हौंसला अफज़ाई की उम्मीद नहीं रख सकती। मेरी माँ, हैलेन और पापा, जिल ने मुझे (तमाम दूसरी चीज़ों के साथ) इन्सानी संघर्ष का उत्सव मनाना, अपने अतीत को जान एक बेहतर भविष्य के लिए लड़ना सिखाया है। और उन्होंने मुझे सबसे अच्छी बड़ी बहन, रूथी टमारा, भी दी है जिसने मुझे हर तरह से प्रोत्साहित किया है।

माइकेल एनराइट – मेरे प्रेमी व जीवनसाथी - पहले से जानते थे कि मैं किताब लिखने का काम कर सकती हूँ और यह कहने का कोई मौका उसने नहीं गँवाया। उसका मुझ पर विश्वास, और इस परियोजना के प्रति उसका निर्मल उत्साह, मुझे भयभीत करने के साथ-साथ उत्तेजित भी करता था। उसने हर कदम पर मेरे चाहने पर मुझे बल दिया, ज़रूरत पड़ने पर उकसाया-धकियाया और काम करने का स्थान दिया। मैं सच में इस सब के लिए आभारी हूँ। साथ ही एनराइट कुनबे – डैनियल, एन्थनी और नैन्सी की नेकदिली के लिए भी एहसानमन्द हूँ।

मेरा बेटा – गैब्रियल ज़ेव एनराइट लेवाइन – फिलहाल छह साल का है। हाना की कहानी जानने के लिए काफी छोटा। पर जब वह बड़ा होगा, मैं उसे यह कहानी पढ़कर सुनाऊँगी। उम्मीद है कि वह भी हाना, जॉर्ज और फूमिको के प्रति उतना ही आकर्षित होगा, जितना मैं हुई थी। उम्मीद है कि इस कहानी से वह यह भी सीखेगा कि इतिहास मायने रखता है और अकथनीय बुराई के बावजूद, अच्छे लोग और अच्छे कामों से फर्क पड़ सकता है।

एक सच्ची अनूठी कहानी जो 37 से भी ज़्यादा देशों में पढ़ी गई है।

मार्च 2000 में तोक्यो, जापान के चिल्ड्रन हॉलोकॉस्ट एजुकेशन सेंटर में एक सूटकेस पहुँचा। उसके ऊपर सफेद रंग से लिखा हुआ था - हाना ब्रैडी, मई 16, 1931, वाइज़ैनकिंड (यतीम)।

जिन बच्चों ने उस सूटकेस को देखा उनके मन में कई सवाल थे। हाना ब्रैडी कौन थी? उसके साथ क्या हुआ? वे चाहते थे कि उनके सेंटर की निदेशक फूमिको इशिओका इन सवालों के जवाब ढूँढने में उनकी मदद करें।

सुराग की तलाश में फूमिको यूरोप और उत्तरी अमरीका की रोमांचक यात्रा पर जाती हैं। सूटकेस के रहस्य को जानने में वो 70 साल पीछे पहुँच जाती हैं, जहाँ छोटी हाना और उसका परिवार चेकोस्लोवाकिया के एक कस्बे में खुशहाल ज़िन्दगी जी रहे थे, जो नाज़ी हमले के कारण पूरी तरह से तहस-नहस हो गया था।

मूल्य: ₹ 130.00